साप्ताहिक
शहर सत्ता
PRGI NO. CTHIN/25/A2378
सोमवार, 29 सितंबर से 05 अक्टूबर 2025
हम दिखाएंगे आईना...

पेज 12 में...
भगत सिंह नहीं बनोगे...Gen Z ?

पेज 10 में...
मेरा नाम है... देव आनंद...

वर्ष : 01 अंक : 30 पृष्ठ : 12 मूल्य : 5 रुपए www.shaharsatta.com

पेज 03 हादसा या उत्पादन का लालच

जंगल से शहर बना सहारा...

मुख्य संवाददाता/प्रदीप चंद्रवंशी
मोबाईल नंबर 7000681023

छत्तीसगढ़ की खूफिया एजेंसियों SIB, SIA समेत अब NIA भी नक्सलियों के अर्बन नक्सल नेटवर्क की परतें खोलने लगी है। रायपुर के चंगोराभाठा पकड़ाए नक्सली मियां-बीवी का संपर्क कोरबा से भी था। कोरबा में बाकायदा इन्होने एक बड़ा माकन भी लिया है। हालांकि फ़िलहाल इसकी पुष्टि अफसर नहीं कर रहे हैं। लेकिन यह भी चर्चा है कि रायपुर की गिरफ़्तारी के बाद कोरबा से भी नक्सलियों के दो टॉप लीडरों की गिरफ़्तारी बड़े ही खूफिया तरीके से जांच एजेंसियों ने की। आज SIA ने नक्सली रामा किचाम को भाठागांव इलाके से गिरफ्तार किया है। इससे दो दिन पूर्व चंगोराभाठा और कोरबा से भी गिरफ्तारियां की गई। दो टॉप लीडरों को तो पूछताछ के बाद आनन-फानन में बस्तर ले जाया गया था। उनका क्या हुआ और वो कितने के इनामी थे यह पुष्टि होना बाकि है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि रायपुर से ज्यादा कोरबा में नक्सलियों का प्रॉपर्टी खरीदने की खबर से साफ हो जाता है कि इनका शहरी नेटवर्क अनहोनी को अंजाम देने वाला था।

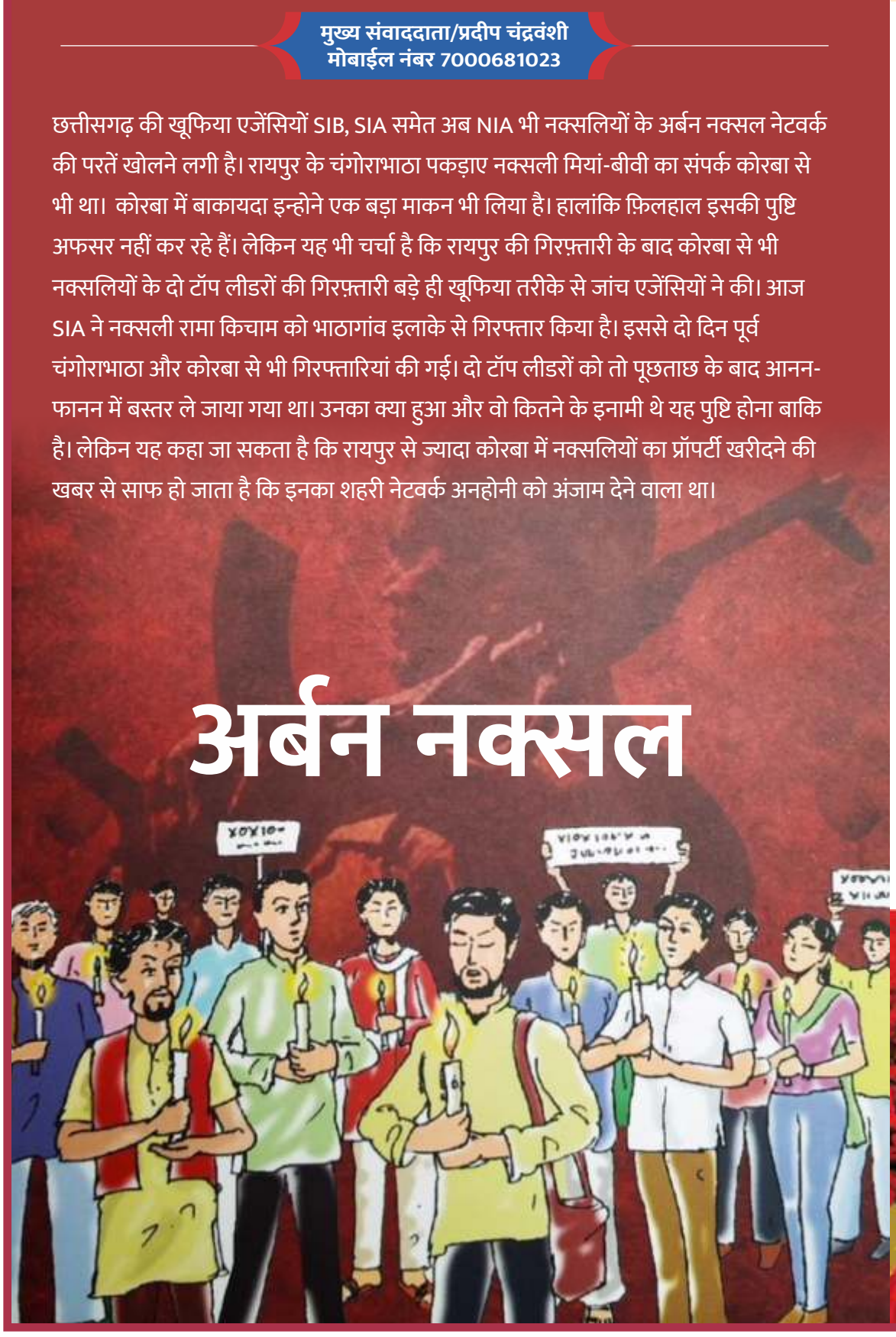

रायपुर, कोरबा, दुर्ग, नांदगांव शहर में अर्बन नेटवर्क

- रायपुर भाठागांव से फिर एक नक्सली गिरफ्तार
- कोरबा में कोयला खदान में करता था मजदूरी,
- नक्सल दंपत्ति से था लिंक, NIA कोर्ट ने भेजा जेल
- कोरबा में भी नक्सलयों ने ख़रीदा था एक बड़ा घर
- खूफिया विभाग कर रहा कोरबा-रायपुर लिंकेज की जांच
- रापा, फावड़ा लेकर मजदूरी करने जाते थे पति-पत्नी

शहर सत्ता/रायपुर। रायपुर में फिर एक नक्सली पकड़ा गया है। SIA ने नक्सली रामा किचाम को भाठागांव इलाके से गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि आरोपी के पास से कुछ सोना और कैश भी जब्त हुआ है। आरोपी को NIA कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रामा कोरबा स्थित कोयला खदान में मजदूरी करता था। SIA को रामा का इनपुट नक्सल दंपति से ही पूछताछ मिला था। 24 सितंबर को चंगोराभाठा से जग्गू और उसकी पत्नी कमला का राम के साथ कनेक्शन था। इनके बीच पैसे के लेनदेन की भी बात सामने आई है। फिलहाल इस पूरे मामले में पुलिस अधिकारी कुछ कहने से बच रहे हैं। मामला पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र का है।

चंगोराभाठा से गिरफ्तार नक्सली दंपत्ति

24 सितंबर को रायपुर में चंगोराभाठा के एक घर से नक्सली पति-पत्नी गिरफ्तार हुए थे। इन अर्बन नक्सलियों ने इलाज के बहाने एक महीने पहले ही किराए पर घर लिया था। हालांकि आरोपी रायपुर के अलग-अलग इलाकों में लंबे वक्त से रह रहे थे। जानकारी के मुताबिक, युवक ने कई बड़े अफसर के घर ड्राइवर और गार्ड की नौकरी भी की है। फिलहाल युवक को पुलिस ने पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया है। वहीं महिला को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। बताया जा रहा है नक्सली रामा किचाम का इन्ही से संपर्क था।

VIP मूवमेंट पर थी नजरें

बस्तर समेत देशभर में माओवादियों के खिलाफ अंतिम चरण की लड़ाई चल रही है। फ़ोर्स का मनोबल और लगातार मिल रही बड़ी सफलता से घबराये नक्सलियों की शांति वार्ता का ऑफर भी ठुकराया जा चूका है। ऐसे में जंगल से हार्डकोर नक्सल लीडर शहरों में स्थापित शेल्टर होम आ रहे हैं। कुछ इलाज करवाने तो कई महफूज रहते हुए VIP मूवमेंट पर नजरें बनाये हैं। ऐसे में पुलिस और सरकार के साथ ही VIP सुरक्षा की चिंता बढ़ना लाजमी है।

शहर में कर सकते थे वारदात

इस बात से शासन और महकमा भी इंकार नहीं कर सकता कि जुंग में हार रहे नक्सली शहर में कोई बड़ा टारगेट अंजाम दे सकते थे। SIA और SIB के साथ ही NIA का नक्सलियों के शहरी नेटवर्क की पकड़ में आने के बाद पेशानी में बल पड़ने लगा है। एक-एक करके नक्सलियों के सेफ हॉउस और शहरी नेटवर्क के मिलने से यह कहा जा सकता है कि VIP बंगलों, उनके आने-जाने पर नजर रखी जा रही थी।

1970 के बाद सबसे खराब दौर में नक्सलवाद

केंद्र सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2025 में अब तक 180 से ज्यादा नक्सली मारे गए हैं। छत्तीसगढ़ की बात करें, तो 2020 से 2023 के 4 साल में 141 नक्सली मारे गए थे। 2024 में 287 नक्सली मारे गए, 1000 अरेस्ट किए गए और 837 ने सरेंडर किया। सरकार के मुताबिक, देश में नक्सल प्रभावित जिले 126 से घटकर अप्रैल 2018 में 90 रह गए थे। जुलाई 2021 में ये 70 हुए और अप्रैल 2024 में सिर्फ 38 रह गए।

पिछले 18-19 महीने से हमारे जवान सफलतापूर्वक नक्सलियों से लड़ रहे हैं। अब अर्बन नक्सली भी पकड़े जा रहे हैं। 31 मार्च 2026 तक नक्सलियों को देश से समाप्त करने का संकल्प जरूर पूरा होगा।

-विष्णु देव साय
सीएम छत्तीसगढ़

10 अगस्त 2024 को गरियाबंद पुलिस ने मैनपुर इलाके से इन आरोपियों को पकड़ा था। (फाइल फोटो)

2020 में दंतेवाड़ा पुलिस ने BJP जिला उपाध्यक्ष सामान सप्लाई के आरोप में पकड़ा था। (फाइल फोटो)

2020 में गुड़गांव के कारोबारी वरुण जैन को गिरफ्तार किया था। (फाइल फोटो)

10 जनवरी 2025 को प्रकाश सोनी को हथियार और विस्फोटक सप्लाई करने के आरोप में पुलिस ने पकड़ा था। (फाइल फोटो)

किस कैडर के नक्सली पर कितना इनाम

कैडर	इनाम
पोलित ब्यूरो	1 से डेढ़ करोड़
सेंट्रल कमेटी मेंबर (CCM)	1 करोड़
स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर (SZCM)	40 से 50 लाख
दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (DKSZC)	25 लाख
डिवीजनल कमेटी मेंबर (DVCM)	8 लाख
एरिया कमेटी मेंबर (ACM)	5 लाख
लोकल ऑब्जर्वेशन स्क्वॉड (LOS)	1 से 3 लाख
चेतना नाट्य मंडली अध्यक्ष (CNM)	1 लाख

नोट- इनमें से कोई नक्सली तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र में भी सक्रिय है और वहां कोई घटना की हो तो वहां की सरकार भी उन पर कैडर के हिसाब से इनाम रखती है

नक्सलियों का दावा- रामचंद्र रेड्डी शहर से हुआ गिरफ्तार

नक्सलियों ने अपने पत्र में भी शहरी नेटवर्क की पुष्टि की है। 23 सितंबर को नक्सलियों की दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इस पत्र में उन्होंने नक्सली रामचंद्र रेड्डी को रायपुर या किसी शहरी इलाके से गिरफ्तार करने और अरेस्ट करने के बाद हत्या करने का आरोप लगाया है। वहीं दूसरी ओर रामचंद्र रेड्डी के बेटे ने सुप्रीम कोर्ट में पुलिस के खिलाफ याचिका लगाई थी। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने रामचंद्र रेड्डी का शव सुरक्षित रखने के निर्देश दिए हैं।

रायपुर से पूर्व में धर दबोचे गए ये

साल 2005 में रायपुर के डंगनिया इलाके से सेंट्रल पोलित ब्यूरो के सदस्य नारायण सान्याल को गिरफ्तार किया गया था। वहीं 21 जनवरी 2008 में इसी इलाके से हथियारों से भरा बैग बरामद हुआ था। इसके ठीक एक दिन बाद यानी 22 जनवरी को डंगनिया के एक महिला छात्रावास से केएस शांतिप्रिया उर्फ मालती और मीना चौधरी उर्फ गीता चौधरी सहित अन्य को गिरफ्तार किया गया था। इनमें से केएस शांतिप्रिया हाल ही में मारे गए नक्सली लीडर (सेंट्रल कमेटी मेंबर) कट्टा रामचंद्र रेड्डी की पत्नी थी।

कारोबारी वॉकी-टॉकी सप्लाई के आरोप में अरेस्ट

18 जून 2020 को कांकेर-राजनांदगांव पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाकर नक्सलियों को वॉकी-टॉकी सेट सप्लाई करने के आरोप में राजनांदगांव और रायपुर के कारोबारियों को गिरफ्तार किया। इनमें राजनांदगांव के श्री बालाजी सिक्यूरिटी एजेंसी के संचालक हितेश अग्रवाल, अजय जैन और दयाशंकर मिश्रा शामिल थे।

गुड़गांव का कारोबारी राजनांदगांव में गिरफ्तार

राजनांदगांव पुलिस ने 2020 में गुड़गांव के कारोबारी वरुण जैन को गिरफ्तार किया था। वरुण पर राजनांदगांव, कांकेर और अन्य क्षेत्रों में नक्सलियों को जूता, गोलियां, वर्दी, वायरलेस सेट, दवाई सहित अन्य सामान सप्लाई करने का आरोप था। इससे पहले इस मामले में वरुण के भाई निशांत जैन, आत्माराम नरेटी, गणेश कुंजाम, मनोज शर्मा, हरिशंकर गडेम और 13 अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका था। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार वरुण जैन और उसके परिवार ने नक्सल इलाकों में अवैध काम करके 18 साल में लगभग 600 करोड़ रुपए की संपत्ति अर्जित की। इस सिंडिकेट पर नक्सली दर्शन पेद्दा के संपर्क में रहने का आरोप था।

5 साल से रायपुर में रह रहे थे नक्सली पति-पत्नी

रायपुर के चंगोराभाठा इलाके में पिछले 5 साल से नक्सली दंपती मजदूरों के भेष में रह रहे थे। नक्सल पति-पत्नी का नाम जग्गू उर्फ रमेश कुरसम (28) और कमला कुरसम (27) साल है। यह मूल रूप से बीजापुर के गंगालूर थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। मजदूर बनकर छिपे, चेहरा ढककर निकलते थे, कॉल इंटरसेप्शन से फंसे, कमरे से गोल्ड-बिस्किट,1 लाख जब्त किया गया। जानकारी के मुताबिक अफसरों के घर ड्राइवर-गार्ड की नौकरी की, फर्जी आधार-कार्ड देकर इलाज के बहाने मकान लिया था। फिलहाल युवक को पुलिस ने पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया है। वहीं महिला को न्यायिक रिमांड पर जेल भेजा गया है।

लेवी वसूलने मैनपुर पहुंचे, 5 नक्सली समर्थक गिरफ्तार

10 अगस्त 2024 को गरियाबंद पुलिस ने मैनपुर इलाके दबिश देकर 5 आरोपियों को पकड़ा था। जांच में सामने आया था कि पांचों आरोपी मैनपुर इलाके से 1 करोड़ से ज्यादा लेवी वसूलकर नक्सलियों को पहुंचा चुके थे। आरोपियों की गिरफ्तारी की पुष्टि तत्कालीन आईजी दीपक झा ने की थी।

- रायपुर के गोदावरी प्लांट में बड़ा हादसा
- कर्मचारियों पर अचानक सिल्ली गिर गई
- आधा दर्जन लोगों की मौके पर मौत हो गई

हादसा या उत्पादन का लालच

शहर सत्ता/रायपुर। गोदावरी पावर एंड स्टील प्लांट में हुआ हादसा जल्दबाजी के चलते हुआ है। कर्मचारियों के मुताबिक दो दिन पहले पेलेट प्लांट को शटडाउन किया था। इसके बावजूद इसकी सफाई के लिए मजदूरों को लगा दिया गया। इससे हॉफर गिर गया और 6 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जाता है कि शटडाउन के बाद कम से कम एक सप्ताह तक उसे ठंडा होने दिया जाता है। इसके बाद उसकी मशीनों में जमे मटेरियल को साफ किया जाता है, लेकिन उत्पादन की जल्दबाजी की चलते ऐसा होने नहीं दिया गया। घायल मजदूरों ने बताया कि दोपहर में रोज की तरह काम कर रहे थे। इस बीच इंजीनियर मुत्तू यादव के साथ अन्य मजदूरों को पेलेट प्लांट में भेजकर सफाई करने कहा। मौके पर पहुंचकर सफाई से पहले जांच की जा रही थी। इस दौरान अचानक हॉफर गिर गया। उसके साथ पिघला लोहा व जमा गर्म रॉ मटेरियल भी इंजीनियर और मजदूरों पर गिर गया। इससे कई लोग दब गए।

ऐसे हुआ हादसा

सूत्रों के मुताबिक, टेंपरेचर कंट्रोल मशीन में तकनीकी खामी आ गई थी। मेंटेनेंस कार्य के बाद मशीन चालू नहीं होने पर मजदूर और तकनीकी अधिकारी जांच करने पहुंचे थे। इसी दौरान ऊपर से कंट्रोल होने वाला शटर बंद नहीं हुआ और अचानक लोहे का बड़ा शेड नीचे गिर पड़ा। शेड बेहद गर्म था, जिससे कई मजदूर बुरी तरह झुलस गए। हादसे में अधिकारी वर्ग के लोग भी शेड की चपेट में आए होने की आशंका है।

आधा दर्जन मौके पर तोड़ दिए थे दम

धरसींवा थाना क्षेत्र के सिलतरा स्थित गोदावरी पावर इस्पात में शुक्रवार दोपहर बड़ा हादसा हो गया। फैक्ट्री के अंदर टेंपरेचर कंट्रोल मशीन का मुआयना करने पहुंचे मजदूरों पर अचानक लोहे का भारी शेड गिर पड़ा। इस दर्दनाक हादसे में करीब आधा दर्जन मजदूरों की मौत हो गई, जबकि कई गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जिनमें से कई की हालत नाजुक बताई जा रही है। हादसा शाम करीब चार बजे हुआ, जिसके बाद फैक्ट्री परिसर में अफरा-तफरी और चीख-पुकार मच गई।

घटना में जिन मजदूरों की मौत हुई है, वो बुरी तरह झुलस गए थे। कुछ की तो चमडिय़ां जलने के बाद हड्डियां तक नजर आ रही थी। कुछ की हड्डियां तक चकनाचूर हो गई। हादसे के बाद फैक्ट्री में जलते मानव मांस की दुर्गंध और दर्दनाक चीखों से वहां का मंजर नरक से भी बदतर था। जिसे सिस्टम और प्रबंधन हादसा बता रहा है उसे तकनीकी जानकार गंभीर अनदेखी मानते हैं। बताते हैं कि पेलेट यूनिट ठंडा नहीं हुआ था। इसके बावजूद मजदूरों से काम लिया जा रहा था। बताया जाता है कि यूनिट के ठंडा होते ही रॉ मटेरियल, जमी सिल्ली आदि आसानी से नीचे गिर जाते हैं। इसे बाद में साफ कर लिया जाता है। कंपनी उत्पादन ज्यादा दिन तक रोकना नहीं चाहती थी। इसके चलते पेलेट यूनिट को पूरी तरह ठंडा होने नहीं दिया गया। इसके चलते मजदूरों की मौत हो गई।

हादसे के बाद पैलेट प्लांट बंद

औद्योगिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, श्रम विभाग द्वारा कड़ी कार्यवाही करते हुए सिलतरा, रायपुर स्थित गोदावरी पॉवर एंड इस्पात लिमिटेड के 1.8 एमटीपीए पैलेट प्लांट में विनिर्माण एवं मेंटेनेंस कार्यों को तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर दिया गया है। यह कार्यवाही कारखाना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के उल्लंघन तथा कारखाने में घटित गंभीर दुर्घटना के मद्देनज़र की गई। विभागीय अधिकारियों ने 26 सितम्बर 2025 को दुर्घटना की सूचना प्राप्त होते ही घटनास्थल पर पहुंचकर जांच प्रारंभ की। जांच में यह तथ्य सामने आया कि कारखाने के ट्रेवलिंग ग्रेट बिल्डिंग के फर्नेस चेम्बर पीएम-02 में कार्य के दौरान अचानक कास्टेबल वाल एवं एक्रेशन गिर जाने से 06 कर्मचारियों की मृत्यु हो गई तथा 06 अन्य घायल हो गए। विभाग ने यह सुनिश्चित किया है कि जब तक कारखाना प्रबंधन सुरक्षा संबंधी सभी आवश्यक उपाय एवं व्यवस्थाएं पूर्ण नहीं कर लेगा, तब तक पैलेट प्लांट का संचालन बंद रखा जाएगा। हादसे के बाद कई मजदूर शेड के नीचे दब गए। मौके पर मौजूद साथियों ने अपने स्तर पर उन्हें बाहर निकालने की कोशिश की। पुलिस और बचाव दल की मदद से दीवार तोड़कर पीछे के रास्ते से दो दर्जन से अधिक मजदूरों को बाहर निकाला गया। मेन गेट पर भीड़ होने के कारण इस रास्ते का इस्तेमाल किया गया। कई घायलों की हालत अब भी चिंताजनक है।

प्रशासन सतर्क, परिजनों को देर से सूचना

घटना की गंभीरता को देखते हुए जिला और पुलिस प्रशासन के आला अधिकारी मौके पर पहुंच गए। मृतक और घायलों के नामों की आधिकारिक पुष्टि अब तक फैक्ट्री प्रबंधन ने नहीं की है। बताया जा रहा है कि हादसे के कई घंटे बाद भी परिजनों को इसकी सूचना नहीं दी गई, जिससे आक्रोश और बढ़ गया है।

मृतकों के परिजन को 46-46 लाख मुआवजा देगा

प्रबंधन ने मृतक के परिवार से एक व्यक्ति को नौकरी देने का भी ऐलान किया है। अगर कोई नौकरी के लायक परिवार में नहीं मिला तो उन्हें हर माह 62 साल की उम्र तक पेंशन दी जाएगी। मृतक के बच्चों की स्कूली और उच्च शिक्षा की व्यवस्था भी कंपनी की ओर से की जाएगी। वहीं घायलों के इलाज से लेकर हर तरह की मदद करने का आश्वासन भी दिया गया है। प्रबंधन ने मृतक के परिवारों को मुआवजे का चेक भी सौंप दिया है। फैक्ट्री प्रबंधन पर एफआईआर देर रात सिलतरा पुलिस ने 6 लोगों की मौत पर फैक्ट्री प्रबंधन के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। भारतीय न्याय संहिता की धारा 289 और 106ए के तहत केस दर्ज कर पुलिस ने कथित लापरवाही की शिकायतों की जांच शुरू कर दी है।

थिनर फैक्ट्री में लगी भीषण आग

रायपुर। राजधानी रायपुर के भनपुरी स्थित बग्गा मशीनरी की थिनर और पेंट फैक्ट्री में भीषण आग लग गई है। अचानक आग की लपटे उठने से इलाके में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की दो गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग बुझाने में जुट गई हैं। यह मामला खमतराई थाना क्षेत्र का है। फैक्ट्री में आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट होने की आशंका जताई जा रही है। इस आगजनी की घटना में अब तक किसी तरह की जनहानि की सूचना नहीं है।

बिजली बिल हाफ योजना बंद

कोयले की कटौती का लाभ उपभोक्ताओं तक नहीं पहुँचा

रायपुर। प्रदेश में बिजली बिल हाफ योजना बंद होने और कोयले पर 400 रुपये प्रति टन के सेस खत्म होने के बावजूद उपभोक्ताओं को इसका पूरा लाभ नहीं मिल पाया है। उपभोक्ताओं में बढ़े बिल की नाराजगी और हाफ बिल योजना की बंदी को देखते हुए प्रदेश सरकार ने अब बिजली दरों में मामूली कटौती का ऐलान किया है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि बिजली बिल हाफ योजना बंद होने से उपभोक्ताओं पर अनावश्यक दबाव बढ़ गया है। पूरे प्रदेश में लगभग 20–30 प्रतिशत उपभोक्ता सितंबर माह में अपना बिल जमा नहीं कर पाए हैं। अगर अक्टूबर में भी बिल जमा नहीं हुआ तो उनकी बिजली कट सकती है। ठाकुर ने इसे सरकार के तानाशाही रवैये और बिजली सब्सिडी बंद करने का परिणाम बताया।प्रदेश में पहले लगभग 54 लाख उपभोक्ताओं को इस योजना की सुविधा मिलती थी, जिसे मुफ्त बिजली देने के नाम पर बंद कर दिया गया। ठाकुर ने कहा कि भाजपा नेता केवल जीएसटी रिफॉर्म का प्रचार कर रहे हैं, लेकिन बिजली बिल में कटौती का लाभ जनता तक नहीं पहुंचा।

कोयले पर 400 रुपये प्रति टन सेस खत्म, बिजली दर में राहत नहीं

ठाकुर ने सवाल उठाया कि कोयले में 400 रुपये प्रति टन सेस हटाने के बावजूद बिजली की दर में कोई कमी क्यों नहीं की गई। त्योहारी सीजन में व्यापारी पुराने जीएसटी दर पर सामान खरीद चुके हैं, ऐसे में नया दर ग्राहकों तक कैसे पहुंचेगा, इस पर सरकार ने ठोस कदम नहीं उठाया।

सरकार ने दी 11 पैसे प्रति यूनिट की कटौती

ऊर्जा सचिव और पावर कंपनी के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा कोयले पर कंपनसेशन सेस समाप्त होने और कोयले पर जीएसटी बढ़ाए जाने के बाद उत्पादन लागत में औसतन 11.54 पैसे प्रति यूनिट की कमी हुई। इसे उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचाने के लिए अक्टूबर माह के बिल में दरों में 11 पैसे प्रति यूनिट की कटौती लागू होगी।

विशेषज्ञ और कांग्रेस का रुख

धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा, "जैसे जीएसटी रिफॉर्म में सुधार करने के लिए सरकार को मजबूर होना पड़ा, वैसे ही अब बिजली बिल हाफ योजना को पुनः शुरू करना जरूरी है। भाजपा नेता केवल फोटो खिंचवा कर प्रचार कर रहे हैं, लेकिन जनता तक वास्तविक लाभ नहीं पहुंचा।" ऊर्जा विभाग का कहना है कि कोयले पर सेस की समाप्ति और उत्पादन लागत में कमी से बिजली कंपनियों को लागत में अनुमानित 152.36 रुपये प्रति टन की बचत होगी।

नई टैरिफ दरें (घरेलू उपभोक्ता)

खपत सीमा (यूनिट)	वर्तमान दर (रुपए/यूनिट)	नई दर (रुपए/यूनिट)
0–100	4.10	3.99
101–200	4.20	4.09
201–400	5.60	5.49
401–600	6.50	6.39
601 से अधिक	8.30	8.19

दिव्यांगों के नाम पर 1,000 करोड़ का घोटाला

हाई कोर्ट ने सीबीआई को दिया स्वतंत्र जांच का आदेश

रायपुर। छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने दिव्यांगों के कल्याण के नाम पर राज्य में हुए 1,000 करोड़ रुपये के कथित घोटाले की सीबीआई जांच का आदेश दिया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जांच पांच फरवरी 2020 को भोपाल में दर्ज एफआईआर के आधार पर की जा सकती है। यदि एफआईआर अधूरी या अनुपलब्ध रही तो सीबीआई नए सिरे से एफआईआर दर्ज कर 15 दिनों में संबंधित विभाग और कार्यालयों से मूल रिकार्ड जब्त कर सकती है। न्यायमूर्ति प्रार्थ प्रतीम साहू और न्यायमूर्ति संजय कुमार जायसवाल की खंडपीठ ने मामले को प्रणालीगत भ्रष्टाचार करार देते हुए उच्च स्तर के अधिकारियों की संलिप्तता की ओर इशारा किया। कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार ने अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की, जिससे स्वतंत्र जांच आवश्यक हो गई।

ऑडिट में खुली 31 अनियमितताएं

वित्त विभाग की विशेष जांच में 31 गंभीर अनियमितताएं सामने आईं। स्टेट रिसोर्स सेंटर (SRC) का 14 वर्षों तक ऑडिट नहीं हुआ। कर्मचारियों की नियुक्ति किए बिना उनके नाम पर वेतन निकाला गया। उपकरण और चिकित्सा सामग्री खरीदी में भारी वित्तीय गड़बड़ी। जांच के घेरे में तत्कालीन महिला एवं बाल विकास मंत्री और वर्तमान भाजपा विधायक रेणुका सिंह, पूर्व मुख्य सचिव विवेक ढांड, एमके राउत, आलोक शुक्ला, सुनील कुजूर, बीएल अग्रवाल, सतीश पांडे, पीपी श्रोती व अन्य शामिल हैं।

घोटाले का पूरा परिदृश्य

2004: स्टेट रिसोर्स सेंटर की स्थापना। उद्देश्य था दिव्यांगों के लिए प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता।

2012: फिजिकल रेफरल रिहैबिलिटेशन सेंटर (PRRC) की स्थापना। इसका कार्य दिव्यांगों को कृत्रिम अंग और चिकित्सा सुविधाएं देना था।

RTI से पता चला कि ये संस्थान केवल कागजों में सक्रिय थे और फंड का दुरुपयोग किया गया। याचिकाकर्ता कुंदन सिंह ठाकुर के नाम पर भी वेतन निकाला गया।

राज्यपाल के एडीसी बनाए गए आईपीएस उमेश गुप्ता आदेश जारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ में राज्यपाल के परिसहाय में बदलाव किया गया है। 2020 बैच के आईपीएस अधिकारी उमेश गुप्ता को राज्यपाल का नया एडीसी नियुक्त किया गया है। वह आईपीएस सुनील कुमार शर्मा के स्थान पर यह पद संभालेंगे। इस संबंध में गृह विभाग की ओर से आदेश भी जारी कर दिया गया है।

साप्ताहिक शहर सत्ता

भारतमाला : घोटाले की कई परतें

जमीन अधिग्रहण और मुआवजे में फर्जीवाड़ा, 43 करोड़ रुपये का खुलासा – चौथी रिपोर्ट का इंतजार

रायपुर। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी भारतमाला परियोजना पर छत्तीसगढ़ में बड़े पैमाने पर घोटाले के आरोप सामने आए हैं। इस परियोजना के तहत भूमि अधिग्रहण और मुआवजा वितरण में गंभीर अनियमितताओं की जांच के लिए राज्य सरकार ने चार विशेष जांच दल गठित किए थे। इनमें से तीन दलों की रिपोर्ट आ चुकी है, जिनमें करोड़ों रुपये के फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ है। अब धमतरी जांच दल की रिपोर्ट का इंतजार है, जिसके बाद पूरी तस्वीर साफ होगी।

मुआवजे में फर्जीवाड़ा – अधिकारियों और भू-माफिया की मिलीभगत

तीन जांच रिपोर्टों के मुताबिक परियोजना में 43 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है। जमीन को कृत्रिम रूप से छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित कर राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) से 78 करोड़ रुपये का भुगतान दिखाया गया। आरोप है कि इस पूरे खेल में एसडीएम, पटवारी और भू-माफिया का गठजोड़ सक्रिय रहा। जांच में यह भी सामने आया है कि बैक डेट पर फर्जी दस्तावेज तैयार कर भुगतान कराया गया।

संभागायुक्त ने दी जानकारी

रायपुर संभागायुक्त महादेव कावरे ने बताया, "चार जांच दल बनाए गए थे। इनमें से तीन दलों ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है, जिन्हें केंद्र सरकार को भेज दिया गया है। धमतरी जिले की रिपोर्ट आना बाकी है। जैसे ही वह रिपोर्ट प्राप्त होगी, सभी रिपोर्टों को मिलाकर यह तय किया जाएगा कि मुआवजे में किस स्तर तक फर्जीवाड़ा हुआ और दोषियों पर क्या कार्रवाई होगी।"

भारतमाला परियोजना का उद्देश्य

भारतमाला परियोजना भारत सरकार की राष्ट्रीय राजमार्ग विकास योजना है। इसका लक्ष्य नए राजमार्गों का निर्माण करना और अधूरी परियोजनाओं को पूरा करना है। इसी योजना के तहत रायपुर से विशाखापट्टनम तक 463 किलोमीटर लंबी फोरलेन सड़क का निर्माण किया जा रहा है।

विधानसभा में भी उठा मुद्दा

इस घोटाले का मुद्दा राज्य विधानसभा में भी गूंज चुका है। मानसून सत्र के दौरान भाजपा विधायक धरमलाल कौशिक ने मुआवजा वितरण में गड़बड़ी का मामला उठाते हुए सीबीआई जांच की मांग की थी। हालांकि, सरकार ने कहा कि "राज्य की जांच एजेंसियां सक्षम हैं और दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।"

धमतरी रिपोर्ट से साफ होगी तस्वीर

अब सबकी निगाहें धमतरी जांच दल की रिपोर्ट पर टिकी हैं। माना जा रहा है कि यह रिपोर्ट आने के बाद मुआवजे में हुए फर्जीवाड़े की वास्तविक स्थिति और जिम्मेदार व्यक्तियों की पूरी सूची स्पष्ट हो जाएगी। प्रशासन ने संकेत दिया है कि दोषियों पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

भिलाई में चुनरी यात्रा के दौरान बवाल

बच्चों के विवाद से मचा बवाल, चार घायल

भिलाई। छत्तीसगढ़ के भिलाई शहर में शनिवार रात चुनरी यात्रा के दौरान अचानक माहौल बिगड़ गया। छावनी थाना क्षेत्र के कैंप-2 इलाके में सोनकर समाज की यात्रा के दौरान बच्चों के बीच हुई कहासुनी विवाद में बदल गई। थोड़ी ही देर में मामला इतना बढ़ा कि दोनों समुदायों के बीच मारपीट, पथराव और चाकूबाजी हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार विवाद बढ़ने पर मौके पर गाली-गलौज और पत्थरबाजी शुरू हो गई। इसी दौरान दूसरे समुदाय के दो युवक चाकू लेकर पहुंचे और हमला कर दिया। इस घटना में हिंदू समुदाय के 4-5 लोग घायल हो गए। हमलावर भी झगड़े में चोटिल हुए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। सीएसपी हेमप्रकाश नायक ने बताया कि पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपियों सोनू कुरैशी और सानू कुरैशी को हिरासत में ले लिया है। दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है।

तनाव के बीच पुलिस बल तैनात

घटना की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में हिंदू संगठनों के लोग छावनी थाने के बाहर जमा हो गए और आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की। स्थिति को देखते हुए इलाके में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया और देर रात तक गश्त बढ़ा दी गई। घायल कमल और उमेश सोनकर ने बताया कि हर साल की तरह इस बार भी माता रानी को चुनरी चढ़ाने की परंपरा निभाई जा रही थी। इसी दौरान कुछ युवकों ने गाली-गलौच शुरू कर दी। जब उन्हें रोका गया तो पहले पत्थरबाजी और फिर चाकूबाजी की गई, जिससे कई लोग घायल हो गए।

दफनाने और दाह संस्कार दोनों पर रोक, परिजनों के हिंदू धर्म में लौटने के बाद ही हुआ संस्कार

कांकेर में मतांतरण से जुड़ा अंतिम संस्कार विवाद

कांकेर। जिले के चारामा ब्लॉक के ग्राम हाराडुला में एक महिला के अंतिम संस्कार को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया। मृतका के परिवार के ईसाई मत में मतांतरित होने के कारण ग्रामीणों ने गांव में शव दफनाने से रोक दिया, वहीं हिंदू संगठनों ने हिंदू रीति से दाह संस्कार का भी विरोध कर दिया। विवाद बढ़ने पर प्रशासन को दखल देना पड़ा और अंततः मृतका के परिजनों के पुनः हिंदू धर्म अपनाने के बाद ही अंतिम संस्कार संभव हो सका।

परिजनों को गांव और चर्च दोनों जगह से मना किया गया

जानकारी के मुताबिक, हाराडुला गांव के राम सोनवानी और लक्ष्मण सोनवानी भाइयों ने पहले ईसाई धर्म अपना लिया था। गुरुवार को उनकी मां पुनिया बाई का निधन हुआ। परिजन जब शव को गांव में दफनाने ले गए तो ग्रामीणों ने आपत्ति जताते हुए रोक दिया। इसके बाद परिजन शव को चर्च ले गए, लेकिन वहां भी उन्हें अनुमति नहीं मिली। इसके बाद परिजन शव को चारामा

मुक्तिधाम ले गए और हिंदू रीति से अंतिम संस्कार करने की इच्छा जताई। लेकिन यहां भी विवाद खड़ा हो गया। हिंदू संगठनों ने स्पष्ट कहा कि यदि वे हिंदू रीति से संस्कार करना चाहते हैं तो पहले हिंदू धर्म अपनाना होगा, अन्यथा संस्कार की अनुमति नहीं दी जाएगी। स्थिति तनावपूर्ण होने पर थाना प्रभारी और तहसीलदार मौके पर पहुंचे और भीड़ को शांत करने की कोशिश की।

प्रेम में धोखा और रेप केस का तनाव, युवक ने की आत्महत्या

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में सिविल लाइन थाना क्षेत्र में एक युवक ने आत्महत्या कर ली। घटना शनिवार

रात अल्का एवेन्यू के पास रेलवे ट्रैक पर हुई। मृतक की पहचान गौरव सवन्नी (30 वर्ष) के रूप में हुई है। शव के सिर और धड़ अलग-अलग पाए गए। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। सूचना के मुताबिक, गौरव सवन्नी अग्रसेन चौक स्थित साकेत अपार्टमेंट में रहता था। वह करीब 5 दिन पहले ही जेल से जमानत पर बाहर आया था। सुसाइड नोट में गौरव ने लिखा कि जिस लड़की से उसने प्यार किया, उसी ने उसे रेप केस में फंसा दिया। परिवार और पुलिस के अनुसार, गौरव शनिवार शाम को काले रंग की शर्ट और पैंट पहनकर घर से निकला, लेकिन देर रात तक वापस नहीं लौटा। परिजनों को सुसाइड नोट की जानकारी मिलने के बाद उन्होंने रिश्तेदारों और पुलिस को सूचित किया। कुछ देर बाद उसकी लाश रेलवे ट्रैक पर मिली। गौरव के पिता अशोक सवन्नी ने बताया कि नोएडा में रहने के दौरान उनके बेटे की जान-पहचान ऑनलाइन साइट "शादी डॉट कॉम" के जरिए एक युवती से हुई थी।

खमतराई स्थित वनदेवी मंदिर में सदियों पुरानी परंपरा, खेतों के खास पत्थर ही होते हैं स्वीकार

अनोखा मंदिर: जहां प्रसाद में चढ़ते हैं कंकड़-पत्थर

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ की धार्मिक परंपराओं में विविधता और अनोखेपन की झलक देखने को मिलती है। ऐसा ही एक उदाहरण बिलासपुर शहर से सटे खमतराई स्थित वनदेवी मंदिर है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहां देवी को नारियल, फूल या प्रसाद चढ़ाने की परंपरा नहीं है, बल्कि यहां श्रद्धालु कंकड़-पत्थर अर्पित करते हैं। सदियों से चली आ रही इस परंपरा को आज भी श्रद्धालु पूरे आस्था भाव से निभाते हैं।

पांच पत्थरों का चढ़ावा – मनोकामना पूरी करने की मान्यता

वनदेवी मंदिर के पुजारी अश्वनी तिवारी बताते हैं कि इस दरबार में मन्नत मांगने या पूरी होने पर श्रद्धालुओं को पांच पत्थर चढ़ाने की प्रथा है। श्रद्धालु फूल, माला या पूजन सामग्री नहीं लाते, बल्कि पत्थरों के जरिए देवी को प्रसन्न करते हैं। मान्यता है कि जो भी भक्त सच्चे मन से पांच पत्थर चढ़ाता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। पुजारी का कहना है कि मन्नत पूरी होने से पहले और बाद में दोनों अवसरों पर पांच-पांच पत्थर चढ़ाने का नियम है।

विशेष 'गोटा पत्थर' ही होता है स्वीकार

मंदिर के पुजारी बताते हैं कि यहां किसी भी सामान्य पत्थर को अर्पित नहीं किया जा सकता। वनदेवी के दरबार में केवल खेतों में मिलने वाला गोटा पत्थर ही चढ़ाया जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषा में इस पत्थर को 'चमरगोटा' कहा जाता है। परंपरा के अनुसार, यही पत्थर मां को प्रिय है और श्रद्धालु इसी को लेकर मंदिर पहुंचते हैं।

दूर-दराज से आते हैं श्रद्धालु

मंदिर में दर्शन के लिए आसपास के ग्रामीणों के साथ-साथ दूर-दराज के लोग भी आते हैं। श्रद्धालु सुनीता साहू और आनंद बाई का कहना है कि "जब हमें इस मंदिर की अनोखी परंपरा के बारे में पता चला तो हम विशेष रूप से यहां दर्शन करने पहुंचे। यहां मां से मन्नत मांगने वालों की इच्छाएं पूरी होती हैं। यही वजह है कि लोग लगातार यहां आते रहते हैं।"

संपादकीय

• सुकांत राजपूत

भगत या ज़ेन-जेड?

भगत सिंह भी निरंकुश अंग्रेज सरकार से चिढ़े हुए थे और कमोबेश जेन-जेड श्रेणी वाला पूरा एक तबका भी ऐसी प्रवृति के लिडरानों से खार खाये बैठा है। लेकिन शहीदे आज़म की पवित्र क्रांतिकारी और बलिदानी विचारधारा के एक पासंग भी नहीं जेन-जेड के उग्रवादी। भगत अगर आज होते तो वे कभी अपने स्वतंत्रता संग्राम में मां भारती और देश की संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचते। जिस तरह आज की युवा पीढ़ी जेन-जेड की तर्ज पर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षति पहुंचा रही है। बदलाव की युवा नौटंकी भारत देश के पडोसी राज्यों में आसानी से देखी जा सकती है। जान-माल की हानि कर अपने ही देश में मनमानी करने की प्रथा बना चुकी युवा पीढ़ी को शहीद भगत सिंह और उनके साथियों द्वारा आज़ादी के लिए बनाई गई आदर्श योजना को समझना होगा।

बांग्लादेश में युवा आंदोलनकारी अब कट्टरपंथी तब्दील हो गए हैं। नेपाल में जेन-जेड के प्लांटेड प्रदर्शन ने भ्रष्टाचारियों को छोड़कर देश की संपत्ति को ही आग के हवाले कर दिया। भारत को गुलामी से आजादी दिलाने वाले एक से बढ़कर एक क्रांतिकारी कभी देश, युवा और आम नागरिकों को टारगेट नहीं किये थे। उनके दुश्मन फिरंगी थे और वे उनसे सीधे लड़े। इसपर आज के आंदोलनकारी और उग्र हो रहे युवाओं को गंभीरता से सोचना होगा कि वो ऐसा क्या करें कि उन्हें भी भगत सिंह जैसे याद किया जाये ना कि उग्र आंदोलनकारियों जैसा...!

शहीदे आज़म का जीवन अपने आप में इतना प्रेरणादायी था कि हिंदी सिनेमा ने उन्हें बार-बार परदे पर उतारा। उनकी शहादत को नाटकीय अंदाज में पेश किया गया, उनके नारों और गीतों को फिल्मी धुनों में ढाला गया, पर असली भगत सिंह को सिर्फ उनके क्रांतिकारी साहस से नहीं समझा जा सकता। उनका व्यक्तित्व सिर्फ पिस्तौल और बम तक सीमित नहीं था। वे बेहद हंसमुख, सजीव, मसखरे, सहृदय और संतुलित शख्सियत थे। यह पहलू अक्सर फिल्मों में पीछे छूट जाता है। स्वभाव ही किसी व्यक्ति के असली व्यक्तित्व की पहचान है। कोई आदमी कभी-कभी परिस्थितियों या आवेश में अद्भुत काम कर सकता है, पर उसका स्वभाव उसके रोजमर्रा के जीवन से झलकता है। भगत सिंह का स्वभाव इतना सहज और उदार था कि कोई भी उनसे मिलते ही उनका हो जाता था. अंग्रेज जेलर तक उनकी सरलता से प्रभावित हो जाते थे।

सुशील भोले

कोंदा-भैरा के गोठ

-हमर इहाँ के न्याय व्यवस्था ह चाँटी मनले घलो धीरन रेंगथे जी भैरा.

-तभे तो अदालत मन म लोगन के फाइल ह गँजाय रहिथे जी कोंदा.. कभू कभार तो अइसनो देखे ले मिलथे के लोगन मर जथें तभो वोकर फैसला आए नइ राहय.

-सही कहे.. अइसने अभी एक ठ केस के जानबा होय हे.. रायपुर के 83 बछर के जागेश्वर प्रसाद अवधिया ल जब बछर 1986 म मध्यप्रदेश राज्य परिवहन निगम के बस चलय तेमा कर्मचारी रहे के बेरा 100 रुपिया रिश्वत ले के लबारी केस म फँसा दिए रिहिन हें, तेकर फैसला ह 39 बछर बाद हाईकोर्ट ले आय हे.. हाईकोर्ट ह जागेश्वर ल पूरी तरह ले बरी करे हे.

-ददा रे.. 39 बछर बाद!

-हव.. अउ तैं जानत हावस.. ए लबारी आरोप के सेती जागेश्वर ह 36 बछर तक जेल म धँधाय रिहिसे हे.

-तब तो वोकर पूरा जिनगी के नास होगे संगी.

-होबेच करही.. सवाल ए बात के हवय के का वोकर जिनगी के 39 बछर जेन बर्बाद होय हे.. पूरा जवानी जेल म सरे गले हे, तेला वापस लाने जा सकथे का?

-अब 83 बछर के उमर म वोकर बर सब बिरथा हे. सिरतोन अइसन न्याय व्यवस्था ह तो सजा ले घलो बढ़ के हे.

मोदी बेमिसाल नेता : कार्यकुशल कर्मयोगी

हरदीप एस पुरी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की करिश्माई उपस्थिति और संगठनात्मक नेतृत्व की भरपूर प्रशंसा की गई है, लेकिन जिस बात को कम ही लोग जानते और समझते हैं, वह यह है कि उनकी कठोर पेशेवर प्रतिबद्धता ही उनके काम की विशेषता है। गुजरात के मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पिछले ढाई दशकों में उनकी कार्यशैली में निरंतर पेशेवर नैतिकता विकसित हुई है। जो बात उन्हें औरों से अलग बनाती है, वह प्रदर्शन की प्रतिभा नहीं, बल्कि ऐसा अनुशासन है, जो विजन को टिकाऊ प्रणालियों में तब्दील करता है। भारतीय मुहावरे में कहा जाए, तो वह कर्मयोगी हैं: कर्तव्य पर आधारित ऐसा कर्म, जिसका आकलन जमीनी स्तर पर आए बदलाव से होता है।

यही नैतिकता इस वर्ष लाल किले से उनके स्वतंत्रता दिवस के संबोधन का आधार रही। उनके इस भाषण में उपलब्धियों का लेखा-जोखा कम और मिल-जुलकर कार्य करने का चार्टर ज़्यादा प्रस्तुत किया गया: नागरिकों, वैज्ञानिकों, स्टार्ट-अप्स और राज्यों को विकसित भारत के सह-लेखक के रूप में आमंत्रित किया गया। गहन प्रौद्योगिकी, स्वच्छ विकास और मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं में महत्वाकांक्षाओं को कोरे शब्दों में नहीं, बल्कि व्यावहारिक कार्यक्रमों के रूप में प्रस्तुत किया गया। इन कार्यक्रमों को जनभागीदारी, यानी बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने वाले राज्य और उद्यमी लोगों के बीच की साझेदारी को एक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया। हाल ही में किया गया जीएसटी ढाँचे का सरलीकरण इसी पद्धति को दर्शाता है। स्लैब को कम करके और अवरोधों को दूर करके, परिषद ने छोटी फर्मों के लिए अनुपालन लागत कम की है और इसका लाभ सीधे घर-घर तक पहुँचाने की गति बढ़ाई है। प्रधानमंत्री का ध्यान संक्षिप्त राजस्व वक्रों पर नहीं, बल्कि इस बात पर था कि क्या आम नागरिक या छोटा व्यापारी इस बदलाव को जल्दी महसूस कर पाएगा या नहीं। यह स्वाभाविक प्रवृत्ति उस सहकारी संघवाद को प्रतिध्वनित करती है, जिसने जीएसटी परिषद का मार्गदर्शन किया है: राज्य और केंद्र गहन विचार-विमर्श करते हैं, लेकिन सभी एक ऐसी प्रणाली के भीतर काम करते हैं जो स्थिर रहने के बजाय परिस्थितियों के अनुकूल ढल जाती है। नीति को एक जीवंत साधन माना जाता है, जो काग़ज़ पर समरूपता के लिए संरक्षित एक स्मारक के रूप में न रहकर अर्थव्यवस्था की लय के अनुरूप ढाली गई है। यही वह व्यावसायिक दृष्टिकोण है, जो अमेरिका से वापसी की 15 घंटे की लंबी उड़ान के बाद देर रात बिना किसी सूचना के निर्माणाधीन नए संसद भवन के गेट पर पहुंचने की बात को समझाता है।

हाल ही में मैंने प्रधानमंत्री से पंद्रह मिनट का समय माँगा था। इस दौरान हुई चर्चा के दौरान मैं उनकी व्यापक समझ और बहुआयामी दृष्टिकोण — एक ही फ्रेम में समाहित बारीक से बारीक विवरण और व्यापक संपर्क देखकर आश्चर्य चकित रह गया। यह बैठक पैंतालीस मिनट चली। सहकर्मियों ने बाद में मुझे बताया कि उन्होंने इसकी तैयारी में दो घंटे से ज़्यादा समय लगाया, नोट्स, आँकड़े और प्रतिवादों का अध्ययन किया। तैयारी का यह स्तर कोई अपवाद नहीं है; यह कार्य का वह मानदंड है, जिसे उन्होंने स्वयं के लिए निर्धारित किया है और जिसकी वह व्यवस्था से भी अपेक्षा रखते हैं। निरंतर तैयारी की यही आदत सुनिश्चित करती है कि निर्णय ठोस और भविष्य के लिए उपयुक्त हों।

भारत की हाल की प्रगति का अधिकांश आधार उन व्यवस्थाओं और प्रणालियों पर टिका है, जिन्हें हमारे नागरिकों की गरिमा सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। डिजिटल पहचान, सार्वभौमिक बैंक खाते और रीयल-टाइम भुगतान की त्रिमूर्ति ने समावेशन को बुनियादी ढाँचे में बदल दिया है। लाभ सीधे सत्यापित नागरिकों तक पहुँचते हैं; उचित व्यवस्था के कारण गड़बड़ियाँ कम होती हैं; छोटे व्यवसायों को अनुमानित नकदी प्रवाह मिलता है; और नीतियाँ धारणाओं की बजाय आँकड़ों पर आधारित होती हैं। इस प्रकार अंत्योदय - अंतिम नागरिक का उत्थान - यह एक नारा भर नहीं, बल्कि मानक बन जाता है - और प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुँचने वाली प्रत्येक योजना, कार्यक्रम और फ़ाइल की असली कसौटी बन जाता है।

असम के नुमालीगढ़ में भारत के पहले बांस-आधारित 2जी इथेनॉल संयंत्र के शुभारंभ के दौरान मुझे एक बार फिर इसका साक्षी बनने का सौभाग्य मिला। इंजीनियरों, किसानों और तकनीकी विशेषज्ञों के साथ खड़े होकर, प्रधानमंत्री ने सीधे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रश्न पूछे : किसानों को भुगतान उसी दिन कैसे प्राप्त होगा; क्या आनुवंशिक इंजीनियरिंग से ऐसा बाँस तैयार किया जा सकता है, जो तेज़ी से बढ़ता है और गांठों के बीच बाँस के तने की लंबाई बढ़ाता है; क्या महत्वपूर्ण एंजाइमों का स्वदेशीकरण किया जा सकता है; क्या बाँस के हर घटक—तना, पत्ती, अवशेष का इथेनॉल से लेकर फुरफुरल और ग्रीन एसिटिक एसिड तक— आर्थिक उपयोग किया जा रहा है,? चर्चा केवल तकनीक तक ही सीमित नहीं थी। यह लॉजिस्टिक्स, आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन और वैश्विक कार्बन फुटप्रिंट तक व्याप्त रही। अंतर्राष्ट्रीय वार्ताओं में भाग लेने वाले व्यक्ति के रूप में, मैंने इस पद्धति को तुरंत पहचान लिया: संक्षिप्त विवरण की स्पष्टता, विवरण में सटीकता और इस बात पर ज़ोर कि कतार में खड़ा अंतिम व्यक्ति पहला लाभार्थी होना चाहिए।

अमेरिका से सतर्क रहने का समय

डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद विश्व राजनीति में उथल-पुथल मची है। कभी आतंकवादियों के खिलाफ सख्त रहने वाले अमेरिका का पाकिस्तान के प्रति झुकाव बढ़ा है जिससे भारत की चिंता बढ़ गई है। ट्रंप प्रशासन ने भारत विरोधी नीतियां अपनाई हैं और पड़ोसी देशों में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश की जा रही है। डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के बाद से विश्व की राजनीति में उथलपुथल बढ़ी है। एक समय जो अमेरिका आतंकवाद को पनाह देने वाले पाकिस्तान के प्रति कड़ाई बरतता था, वही आज उसकी पीठ थपथपा रहा है। अपने पिछले कार्यकाल में ट्रंप ने पाकिस्तान को आतंकियों को शरण देने और अमेरिका को धोखा देने वाला कहा था, पर अब वे उसकी पैरवी कर रहे हैं और भारत की न केवल उपेक्षा कर रहे हैं, बल्कि उसके हितों के खिलाफ काम भी कर रहे हैं।

ट्रंप ने आपरेशन सिंदूर के बाद से ही भारत विरोधी रवैया अपना रखा है। पहले उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ भारत की सैन्य कार्रवाई पर यह कहा कि उन्होंने दोनों देशों के बीच युद्ध रोकने का काम किया और फिर भारतीय हितों के खिलाफ काम करने में जुट गए। भारत ने पहलगाम के जिस आतंकी हमले के जवाब में पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की थी, उसमें 26 लोगों को उनका मजहब पूछकर मारा जाना महज एक बर्बर आतंकी हमला नहीं था। यह भारत को अशांति में झोंकने की एक बड़ी साजिश थी। इस आतंकी हमले के एक हफ्ते के अंदर ट्रंप परिवार की कंपनी ने पाकिस्तान से क्रिप्टो करेंसी का समझौता किया। आपरेशन सिंदूर के बाद उन्होंने पाकिस्तानी सेना प्रमुख आसिम मुनीर को अमेरिका बुलाकर उनकी प्रशंसा के पुल बांधे। वे यह भूल गए कि पाकिस्तानी सेना ने ही 9/11 हमले की साजिश रचने वाले अलकायदा सरगना लादेन को शरण दे रखी थी। उन्होंने यह भी भुला दिया कि पाकिस्तान ने किस तरह अफगानिस्तान में अमेरिकी सेनाओं के खिलाफ काम किया और उससे पैसे लेकर तालिबान की मदद की। पिछले दिनों ट्रंप ने आसिम मुनीर के साथ पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की भी आवभगत की। उन्होंने दोनों को ग्रेट बताया और वह भी इन खबरों के बीच कि पाकिस्तानी सेना ने किस तरह अपने निर्दोष-निहत्थे लोगों पर बम बरसाए।

ट्रंप राष्ट्रपति बनने के बाद से अमेरिका के आगे अन्य किसी देश को कुछ नहीं समझ रहे हैं। उनका रवैया यह बताता है कि वह अमेरिका के समक्ष अन्य किसी देश को सशक्त होते हुए नहीं देखना चाहते। वे चीन के प्रति इसलिए हमलावर हैं, क्योंकि वह कई देशों को अपने प्रभाव में ले चुका है और अमेरिका के खिलाफ एक धुरी बन गया है। चूंकि भारत का भी पिछले कुछ वर्षों से अंतरराष्ट्रीय कद बढ़ा है, इसलिए ट्रंप उसे भी एक चुनौती के रूप में देख रहे हैं। ऐसा लगता है कि चीन के बाद भारत का उभार और प्रधानमंत्री मोदी की वैश्विक नेता की छवि और भारत को आत्मनिर्भर बनाने की उनकी मुहिम ट्रंप के साथ अमेरिकी डीप स्टेट के लिए चिंता का विषय बन गई है। अमेरिकी डीप स्टेट के लिए यह जरूरी नहीं कि उसके राष्ट्रपति का सोच उससे मेल खाता हो। वह अपने एजेंडे के हिसाब से काम करता ही रहता है। वह जिस भी देश के उभार को अपने लिए चुनौती मानता है, उसके समक्ष परेशानियां खड़ी करता है। कई बार इसकी शुरुआत उसके पड़ोसी देशों में प्रतिकूल वातावरण बनाकर की जाती है। इसे अनदेखा न किया जाए कि भारत के पड़ोस में पहले बांग्लादेश को अस्थिर किया गया और नई दिल्ली से मित्रवत संबंध रखने वाली शेख हसीना को सत्ता से बाहर किया गया और फिर नेपाल में भी अशांति पैदा की गई। दोनों ही देशों के घटनाक्रम के पीछे विदेशी ताकतों का हाथ देखा गया।

साप्ताहिक शहर सत्ता

एक्टर विजय की करूर रैली में भगदड़, 39 लोगों की मौत

नई दिल्ली। तमिलनाडु के करूर में अभिनेता से नेता बने विजय की रैली में शनिवार शाम को मची भगदड़ में कम से कम 39 लोगों की मौत हो गई है. जबकि 100 के करीब लोग घायल बताए जा रहे हैं.इस संबंध में तमिलनाडु के स्वास्थ्य सचिव पी. सेंथिल कुमार ने मीडिया को बताया है कि हादसे में अब तक 39 लोगों की मौत हो चुकी है और कुल 95 घायल लोग अस्पताल में भर्ती हैं. ये हादसा उस वक्त हुआ जब शनिवार शाम विजय करूर में तमिलगा वेट्री कषगम (टीवीके) पार्टी की एक रैली को संबोधित कर रहे थे. कार्यक्रम में भीड़ बढ़ती गई और अचानक बेकाबू हो गई. इस दौरान कई लोग बेहोश होकर गिर पड़े. कई प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि खराब प्रबंधन और अपर्याप्त सुरक्षा के चलते इस रैली में भगदड़ मची. इस हादसे के पीड़ितों में ज्यादातर वो युवा शामिल हैं, जिनकी उम्र 18 से 30 साल के बीच है.

अखबार के मुताबिक, टीवीके पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के लिए करूर में बस स्टैंड गोलचक्कर और लाइट हाउस सहित चार जगहों की सूची सौंपी थी. चूंकि ये चारों जगहें घनी आबादी वाले व्यावसायिक इलाके थे, इसलिए पुलिस ने अनुमति देने से इनकार कर दिया था.हालांकि, पुलिस ने करूर-इरोड रोड स्थित वेलुसामीपुरम में कार्यक्रम की अनुमति दे दी, जहां अन्नाद्रमुक महासचिव एडप्पादी के. पलानीस्वामी ने गुरुवार (25 सितंबर) को एक रैली आयोजित की थी. आयोजकों ने घोषणा की थी कि टीवीके अध्यक्ष विजय दोपहर 12 बजे भाषण देंगे. इसके लिए सुबह 9 बजे से ही भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी, लेकिन वे निर्धारित समय पर नहीं पहुंच पाए.

घटना के संबंध में तमिलनाडु के शीर्ष पुलिस अधिकारी जी. वेंकटरमन ने बताया कि अभिनेता-राजनेता विजय के रैली में पहुंचने में सात घंटे की देरी के कारण समर्थकों की बेकाबू भीड़ उमड़ पड़ी.उन्होंने आगे कहा कि आयोजकों ने 10,000 लोगों की अपेक्षित संख्या बताई थी, लेकिन लगभग 27,000 लोग आए.रैली के लिए 500 सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए थे. टीवीके की पिछली रैलियों में कम भीड़ होती थी, लेकिन इस बार उम्मीद से कहीं ज्यादा लोग जुटे.इस हादसे के प्रत्यक्षदर्शी बी. कनिष्क ने अखबार से कहा, 'मुझे अचानक भीड़ ने नीचे धकेल दिया. हिलने-डुलने की बिल्कुल जगह नहीं थी. मैं बेहोश हो गया था.'एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी कार्तिक ने बताया, 'बेकाबू भीड़ द्वारा मुझे धकेले जाने का पता चलने पर, मेरे दोस्त ने तुरंत मुझे सुरक्षित जगह पहुंचाया. अगर लोगों को घंटों इंतज़ार न करना पड़ता तो यह स्थिति टल सकती थी।

10 लाख मुआवजा और न्यायिक जांच

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने करूर भगदड़ पर गहरा दुख व्यक्त किया है. उन्होंने मृतकों के परिवारों को मुख्यमंत्री राहत कोष से ₹10 लाख की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की और मामले की जांच के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीश के नेतृत्व में एक सदस्यीय जांच आयोग का गठन करने का निर्देश दिया है.

भगदड़ की वजह क्या?

करूर के जिस मैदान में एक्टर विजय की रैली का आयोजन किया गया था, उसकी क्षमता 10,000 लोगों की है, लेकिन वास्तव में मौके पर 30,000 के लगभग लोग मौजूद थे।तमिलनाडु के डीजीपी इनचार्ज जी वेंकटरमन के अनुसार,TVK की रैलियों में भीड़ कम होती है। मगर, इस बार अचानक से जो भीड़ बढ़ी, इसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी। आयोजनकर्ताओं का अनुमान था कि रैली में 10,000 तक लोग आ सकते हैं, मगर मौके पर 27,000 से ज्यादा लोग पहुंच गए। इससे स्थिति अनियंत्रित हो गई।

भगदड़ से पहले क्या हुआ?

मैदान में भीड़ बढ़ने की वजह से विजय को असहज महसूस होने लगा और विजय ने अपना भाषण बीच में ही रोक दिया। लोगों की मदद करने के लिए विजय ने भीड़ में पानी की बोतलें फेंकनी शुरू कर दी, जिसका वीडियो भी सामने आया है। इसी दौरान मौके पर भगदड़ की स्थिति बनने लगी और कुछ ही देर में हालात अनियंत्रित हो गए।

गृह मंत्रालय ने मांगी रिपोर्ट

तमिलनाडु पुलिस ने भगदड़ की जांच के लिए कमिशन का गठन किया है। वहीं, गृह मंत्रालय ने भी तमिलनाडु सरकार से मामले पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। इस मामले में एक्टर विजय और उनकी पार्टी के लोगों से भी पूछताछ हो सकती है।

अमेरिका से सही से पेश आए भारत, ट्रंप के मंत्री ने दी सलाह

नई दिल्ली। भारत और अमेरिका के बीच अभी तक ट्रेड डील साइन नहीं हुई है. इस डील से पहले डोनाल्ड ट्रंप के वाणिज्य सचिव होवार्ड लुटनिक ने एक बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा भारत को अमेरिका के साथ सही तरह से पेश आना होगा. डोनाल्ड ट्रंप के वाणिज्य सचिव होवार्ड लुटनिक ने यह भी कहा कि हमें कई देशों को सुधारना होगा और साथ ही यह जोर दिया कि ऐसी नीतियों को खत्म किया जाए जो अमेरिकी हितों को नुकसान पहुंचा रही हैं.

'भारत को अपने बाजार खोलना चाहिए

न्यूज नेशन को दिए इंटरव्यू में लुटनिक ने कहा कि भारत को अपने बाजार खोलने चाहिए और ऐसी नीतियां नहीं अपनानी चाहिए जो अमेरिका को नुकसान पहुंचा सकती हैं. उन्होंने कहा, 'हमारे पास कई ऐसे देश हैं जिन्हें सुधारने की जरूरत है, जैसे स्विट्जरलैंड और ब्राजील. भारत भी ऐसे ही देश है जिसे अमेरिका के प्रति सही कदम उठाने चाहिए. अपने बाजार खोलें और ऐसे काम बंद करें जो अमेरिका को नुकसान पहुंचाते हैं. इसी वजह से हमारी इन देशों के साथ असहमति है.' लुटनिक ने कहा कि व्यापार से जुड़े मुद्दे समय के साथ हल हो सकते हैं, लेकिन अगर भारत अमेरिकी ग्राहकों तक अपने उत्पाद पहुंचाना चाहता है तो उसे अमेरिका के साथ सहयोग करना होगा. उन्होंने कहा, 'ये मुद्दे समय के साथ सुलझ जाएंगे, लेकिन इसके लिए समय लगेगा. इन देशों को समझना होगा कि अगर आप अमेरिकी उपभोक्ताओं को बेचना चाहते हैं, तो अमेरिका के राष्ट्रपति के साथ सहयोग करना होगा।

BEL कंपनी से क्यूआरसैम मिसाइल सिस्टम को खरीदने की तैयारी

30 हजार करोड़ के 'अनंत शस्त्र' से होगा दुश्मनों का सफाया

नई दिल्ली। बेहद तेजी से दुश्मन की मिसाइल को आसमान में मार गिराने वाली मध्यम दूरी की क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर (क्यूआरसैम) मिसाइल को भारतीय सेना अब ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करने की तैयारी कर रही है. इसके लिए सेना ने सरकारी कंपनी बीईएल से 30 हजार करोड़ में इस क्यूआरसैम मिसाइल सिस्टम को खरीदने की तैयारी की है, जिसे अब 'अनंत शस्त्र' एयर डिफेंस सिस्टम के नाम से जाना जाएगा. हालांकि सेना ने आधिकारिक तौर से ये नहीं बताया है कि इस टेंडर के जरिए कितनी मिसाइल खरीदी जाएंगी, लेकिन माना जा रहा है कि 5-6 रेजीमेंट को इस टेंडर के जरिए खड़ा किया जा सकता है. डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) की ओर से विकसित की गई क्यूआरसैम मिसाइल की रेंज करीब 30 किलोमीटर है. मिसाइल दूसरी मिसाइलों के मुकाबले बेहद तेजी से काउंटर-अटैक करती है. इससे पहले कि दुश्मन की मिसाइल जमीन पर गिरकर कुछ नुकसान पहुंचा पाए, क्यूआरसैम आसमान में ही दुश्मन की मिसाइल को तबाह कर देती है.

भारतीय सेना इन क्यूआरसैम मिसाइल प्रणाली को चीन और पाकिस्तान के सीमावर्ती इलाकों में तैनात करने की तैयारी कर रही है. ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, पाकिस्तान की फतह मिसाइल, हरियाणा के सिरसा एयर बेस तक पहुंचने में कामयाब हो गई थी. साथ ही पाकिस्तान की मिसाइल तक भी पहुंच गई थी. सिरसा में पाकिस्तान की मिसाइल को आसमान में मार गिराया गया था और आदमपुर में पाकिस्तानी मिसाइल खाली खेत में जाकर गिरी थी. ऐसे में पाकिस्तानी मिसाइल से भारत को कोई नुकसान नहीं हुआ था।

कुपवाड़ा में घुसपैठ की कोशिश नाकाम, 2 आतंकी ढेर

कपवाड़ा। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में सुरक्षाबलों ने आतंकियों के घुसपैठ की कोशिश को नाकाम कर दिया है. केरन सेक्टर में रविवार (28 सितंबर) को घुसपैठ की कोशिश करने वाले आतंकी सुरक्षाबलों की फायरिंग में मारे गए. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने जानकारी दी कि आतंकवादियों का एक समूह नियंत्रण रेखा (LoC) पार करने की कोशिश कर रहा था. सुरक्षा बलों ने तुरंत कार्रवाई की और गोलीबारी के दौरान दो आतंकी ढेर हो गए. मारे गए आतंकवादियों की अभी तक शिनाख्त नहीं हो पाई है. सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि प्रारंभिक जांच से संकेत मिलता है कि ये आतंकी पाकिस्तान से घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे. उनकी पहचान और संगठन का पता लगाने के लिए तलाशी अभियान जारी है.सुरक्षा बलों ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी है. हैदर चौकी और उसके आस-पास के क्षेत्रों में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है ताकि किसी और आतंकी की मौजूदगी की पुष्टि हो सके. स्थानीय सूत्रों के अनुसार, मुठभेड़ स्थल के आसपास लोगों की आवाजाही पर भी रोक लगा दी गई है.कुपवाड़ा और केरन सेक्टर लंबे समय से घुसपैठ की कोशिशों का गवाह रहा है. सर्दियों से पहले आतंकवादी अक्सर बर्फबारी से पहले भारतीय सीमा में दाखिल होने की कोशिश करते हैं. सुरक्षा बलों की चौकसी और लगातार ऑपरेशनों से इन प्रयासों को बार-बार नाकाम किया जा रहा है.

जयशंकर ने यूएन में सुनाई खरी-खोटी तो लगी मिर्ची

भारत की चाल में फंस गया पाकिस्तान!

नई दिल्ली। भारत ने पाकिस्तान की आलोचना की है क्योंकि उसने विदेश मंत्री एस. जयशंकर के संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) में आतंकवाद पर दिए गए भाषण पर प्रतिक्रिया दी, हालांकि सीधे पाकिस्तान का नाम नहीं लिया गया था. भारत ने इसे पाकिस्तान द्वारा लंबे समय से सीमा पार से आतंकवाद करने की स्वीकृति बताया.

शनिवार को UNGA में अपने भाषण में जयशंकर ने पाकिस्तान का नाम लिए बिना कहा कि मुख्य अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी हमलों का स्रोत एक ही देश है. उन्होंने कहा कि भारत ने स्वतंत्रता के बाद से आतंकवाद के खतरे का सामना किया है. इसके बाद शाम को पाकिस्तान के प्रतिनिधि ने राइट ऑफ रिप्लाई के तहत आरोप लगाया कि भारत पाकिस्तान की बदनामी करने की कोशिश कर रहा है, जबकि जयशंकर ने किसी देश का नाम नहीं लिया. पाकिस्तान ने इसे जानबूझकर झूठ फैलाने का प्रयास बताया.

भारत ने जवाब में क्या कहा?

भारत ने जवाब में कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि एक पड़ोसी देश जिसने नाम नहीं लिया, फिर भी प्रतिक्रिया देकर सीमा पार आतंकवाद की अपनी पुरानी प्रथा को स्वीकार कर रहा है. भारत के स्थायी मिशन के दूसरे सचिव रेंटाला श्रीनिवास ने कहा कि पाकिस्तान की साख स्वयं बोलती है और इसके आतंकवाद का असर केवल पड़ोसी देशों तक ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में है.

जयशंकर ने की ये अपील

जयशंकर ने अपने भाषण में अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आग्रह किया कि वे उन देशों की स्पष्ट निंदा करें जो राज्य नीति के रूप में आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं. उन्होंने आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने और प्रमुख आतंकवादियों पर प्रतिबंध लगाने की जरूरत पर जोर दिया. जयशंकर ने कहा कि भारत ने अपनी जनता की सुरक्षा के लिए आतंकवादियों को न्याय के कटघरे में लाया, उदाहरण के तौर पर अप्रैल में पहलगाम में मासूम पर्यटकों की हत्या को दर्शाया. पाकिस्तान के प्रतिनिधि ने पुनः प्रतिक्रिया देने की कोशिश की, लेकिन भारत के श्रीनिवास ने हॉल छोड़ दिया.सार यह है कि भारत ने स्पष्ट किया कि पाकिस्तान की प्रतिक्रिया उसके आतंकवाद के लंबे इतिहास का खुलासा करती है और दुनिया को इससे सावधान रहने की जरूरत है.

BCCI के अध्यक्ष बने मन्हास

राजीव शुक्ला और देवजीत सैकिया को मिली अहम भूमिका

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में नई कार्यकारिणी का गठन हो गया है. शुक्रवार 28 सितंबर को मुंबई में हुई वार्षिक आमसभा में चुनाव अधिकारी ने नए पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की. इस बैठक के बाद अब भारतीय क्रिकेट की कमान नए हाथों में चली गई है.

इस बार BCCI के अध्यक्ष के पद पर पूर्व क्रिकेटर मिथुन मन्हास को चुना गया है. उपाध्यक्ष के रूप में राजीव शुक्ला को जिम्मेदारी सौंपी गई है. वहीं देवजीत सैकिया को बोर्ड का नया सचिव बनाया गया है. इसके अलावा प्रभतेज सिंह भाटिया को संयुक्त सचिव और ए. रघुराम भाट को कोषाध्यक्ष चुना गया है. नई कार्यकारिणी अगले कार्यकाल के लिए भारतीय क्रिकेट से जुड़े सभी अहम फैसले लेगी और घरेलू व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले टूर्नामेंट्स की नीतियों पर काम करेगी.सिर्फ शीर्ष पद ही नहीं, BCCI के अन्य अहम पदों पर भी नए चेहरे सामने आए हैं. जयदेव निरंजन शाह को एपेक्स काउंसिल का सदस्य चुना गया है. वहीं अरुण सिंह धूमल और एम. खैरुल जमाल मजरूमदार को गवर्निंग काउंसिल का सदस्य बनाया गया है. यह टीम आने वाले समय में भारतीय क्रिकेट के संचालन और नई योजनाओं पर काम करेगी।

कौन हैं मिथुन मन्हास?

45 साल के मिथुन मन्हास भले ही टीम इंडिया के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं खेले हों, लेकिन घरेलू क्रिकेट में उनका रिकॉर्ड काबिल-ए-तारीफ रहा है. उन्होंने 157 फर्स्ट क्लास मैचों में 9714 रन बनाए हैं, जिसमें 27 शतक शामिल हैं. लिस्ट-ए क्रिकेट में भी उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है और 4126 रन अपने नाम किए. दिल्ली रणजी टीम के कप्तान के रूप में उन्होंने लंबे समय तक बेहतरीन प्रदर्शन किया और कई बार टीम को मुश्किल हालात से जीत की ओर ले गए हैं.मन्हासे के पास आईपीएल में भी खेलने का अनुभव है. वह दिल्ली डेयरडेविल्स, किंग्स इलेवन पंजाब और पूणे वॉरियर्स जैसी टीमों के लिए खेल चुके हैं. वीरेंद्र सहवाग और युवराज सिंह जैसे दिग्गजों के साथ ड्रेसिंग रूम शेयर कर चुके मन्हास ने जम्मू कश्मीर क्रिकेट में खिलाड़ी और प्रशासक दोनों भूमिकाओं में जिम्मेदारी संभाली है. BCCI का अध्यक्ष बनने के बाद अब मन्हास पर भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाईयों तक ले जाने की बड़ी जिम्मेदारी होगी. आने वाले समय में घरेलू ढांचे को मजबूत करने और खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं देने की दिशा में उनसे अहम फैसले लेने की उम्मीद है.

हम करते हैं मैच का बहिष्कार

शहर सत्ता अख़बार ऑपरेशन सिंदूर, पुलवामा और पहलगाम समेत अब तक आतंकिस्तान द्वारा किये गए हमलों में शहीद हर उस भारतीय परिवार और जनभावना के साथ है जो दुश्मन देश को नेस्तनाबूद होते देखना चाहते हैं। इसके मद्देनजर शहर सत्ता परिवार भारत-भिखारिस्तान के बीच होने वाले बेवजह और बेमानी एशिया कप की कवरेज भी नहीं करेगा। हम टेरर और टॉक के साथ ही खून और पानी बहाने वालों का मुखर विरोध करते हैं। बीसीसीआई, आईसीसी, असीसी के भारत-आतंकिस्तान मैच का बहिष्कार करते हुए मैच की ख़बरें और कवरेज नहीं कर रहे हैं। ऐसी खेल भावना और मज़बूरी से हम नहीं बांधें है इसलिए दोनों देशों के इस आयोजन को और भविष्य के सभी खेलों की ख़बरें नहीं प्रसारित करेंगे।

-संपादक शहर सत्ता

प्रज्ञान ओझा और आरपी सिंह चयन समिति में शामिल

नई दिल्ली। BCCI ने भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम की चयन समिति की घोषणा कर दी है. प्रज्ञान ओझा और आरपी सिंह को चयन समिति में शामिल किया गया है. पुरुष टीम की चयन समिति में मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर हैं.दूसरी ओर भारतीय महिला क्रिकेट टीम की चयन समिति की घोषणा कर दी है. भारत की पूर्व क्रिकेटर अमीता शर्मा को चयन समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया है, जबकि जायेश जॉर्ज को महिला प्रीमियर लीग का चेयरमैन नियुक्त किया गया है. अमीता शर्मा बतौर चेयरमैन नीतू डेविड की जगह लेंगी. चयन समिति में उनके साथ श्यामा डे, सुलक्षणा नायक, जया शर्मा और श्रवन्ती नायडू काम करेंगी. सेलेक्शन कमिटी की चेयरमैन अमीता शर्मा ने अपने करियर में 116 वनडे और, टी20 और 5 टेस्ट मैच भी खेले. अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर में उन्होंने 108 विकेट लिए. महिलाओं का IPL कही जाने वाली वीमेंस प्रीमियर लीग (WPL) का चेयरमैन पद केरल के जायेश जॉर्ज को दिया गया है.अमीता शर्मा (चेयरमैन), सुलक्षणा नायक, श्यामा डे, जया शर्मा, श्रवन्ती नायडू। इन सभी का नया कार्यकाल महिला ODI वर्ल्ड कप 2025 के बाद से शुरू होगा, जो 30 सितंबर-2 नवंबर तक खेला जाना है. महिला टीम की सेलेक्शन कमिटी में पहले नीतू डेविड (चेयरमैन), अराति वैद्य, रेणु मारगराते, वेंकटचार कल्पना और मीठू मुखर्जी शामिल थीं.

GST रिफॉर्म के बाद त्योहारी सीजन में बढ़ी ऑनलाइन बिक्री

नई दिल्ली। जीएसटी दरों में कटौती के बाद त्योहारी सीजन में खरीदारी तेज हो गई है. उभरते बाजारों और महानगरों में मांग में

23 से लेकर 25 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी देखने को मिली है. 22 सितंबर 2025 से लागू हुए जीएसटी रिफॉर्म के तहत बड़ी स्क्रीन वाले टीवी, फर्नीचर और मीडियम रेंज फैशन उत्पादों पर टैक्स स्लैब घटाए गए हैं. इससे कीमतों में कमी आई और उपभोक्ताओं को सीधा फायदा मिला. बड़े टीवी पर जीएसटी 28% से घटाकर 18% कर दिया गया, जिससे कीमतों में 6-8% की गिरावट आई और प्रीमियम मॉडल की मांग बढ़ी. 2,500 रुपये से कम कीमत वाले फैशन पर अब केवल 5% जीएसटी लग रहा है, जिससे बिक्री में तेजी आई. फर्नीचर की मांग भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी. रेडसीर की रिपोर्ट के मुताबिक पहले दो दिनों की बिक्री में सालाना आधार पर 23-25% की वृद्धि हुई है।

अंडमान सागर में मिला मिथेन का भंडार

नई दिल्ली। अमेरिकी टैरिफ, H-1B की बढ़ाई गई फीस और व्यापार वार्ता को लेकर जारी अनिश्चितताओं के बीच भारत के लिए एक 'गुड न्यूज' है. दरअसल, अंडमान सागर में नैचुरल गैस का बड़ा भंडार हाथ लगा है. यह खोज किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है. इससे भारत एनर्जी सेक्टर में भारत और मजबूत व आत्मनिर्भर बनेगा.शुक्रवार को पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने इसका ऐलान किया. इस दौरान उन्होंने इसे 'ऊर्जा के अवसरों' का सागर बताया. उन्होंने कहा, प्राकृतिक गैस की यह खोज अमृत काल के हमारे इस सफर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी.

कहां मिला नैचुरल गैस का भंडार?

नैचुरल गैस का यह रिजर्व के विजयपुर के 2 कुएं में पाया गया, जो अंडमान तट से लगभग 17 किलोमीटर दूर 295 मीटर की गहराई पर स्थित है. इसकी लक्षित गहराई 2650 मीटर रखी गई थी. यानी कि कुएं को पानी की सतह से लेकर समुद्र के नीचे जमीन में कुल 2650 मीटर की गहराई तक खोदा गया था. पहले 295 मीटर की गहराई तक खोदे जाने पर नैचुरल गैस रिजर्व का जैकपॉट हाथ लगा. इसके बाद लगभग 2355 मीटर की गहराई तक और ड्रिल किया गया. पुरी ने कहा, "कुएं के 2212 से 2250 मीटर की गहराई तक किए गए शुरुआती उत्पादन परीक्षण से नैचुरल गैस के होने का पता चला. इसमें समय-समय पर फ्लेयरींग होते भी भी देखी गई. गैस के नमूने जहाज से काकीनाडा लाए गए, उनकी टेस्टिंग की गई और पाया गया कि उनमें 87 परसेंट मीथेन है." आने वाले महीनों में गैस पुल की साइज और कमर्शियली यह कितना मददगार साबित होगा इसका पता लगाया जाएगा।

1 अक्टूबर, 2025 से नेशनल पेंशन सिस्टम में बड़ा बदलाव

नई दिल्ली। 1 अक्टूबर, 2025 से नेशनल पेंशन सिस्टम में बड़ा बदलाव होगा. इसमें गैर-सरकारी क्षेत्र से जुड़े सब्सक्राइबर्स को मल्टीपल स्कीम फ्रेमवर्क के तहत इक्विटी में 100 परसेंट तक निवेश की अनुमति होगी. यानी कि 1 अक्टूबर से NPS के गैर-सरकारी सब्सक्राइबर्स पेंशन की पूरी रकम शेयर बाजार से जुड़ी स्कीम में लगा सकेंगे.

जबकि पहले इक्विटी में निवेश की लिमिट 75 परसेंट थी. इसके साथ ही सरकारी सेक्टर की तरह प्राइवेट सेक्टर के कर्मचारियों से भी PRAN (Permanent Retirement Account Number) खोलने पर ई-PRAN किट के लिए 18 रुपये और फिजिकल PRAN कार्ड के लिए 40 रुपये का फीस लिया जाएगा. इसमें एनुअल मेंटेनेंस चार्ज प्रति अकाउंट 100 रुपये होगा. अटल पेंशन योजना (APY) और NPS लाइट सब्सक्राइबर्स के लिए PRAN ओपेनिंग चार्ज और मेंटेनेस चार्ज 15 रुपये होगा. जबकि ट्रांजेक्शन पर कोई फीस नहीं लगेगी.

25000 टन सोने के मालिक हैं भारतीय परिवार

नई दिल्ली। भारत में सोने का क्रेज ही अलग है.आलम यह है कि यहां बिना सोने-चांदी के गहने के शादी अधूरी मानी जाती है. कई बार लोग एक-दूसरे को किसी मौके पर सोने के छोटे-मोटे गहने भी गिफ्ट करते हैं. भारत में सोने को शुभ माना जाता है. इसके अलावा, सुरक्षित निवेश के रूप में भी इसकी डिमांड काफी ज्यादा है. सोने को लेकर इसी दिवानगी का नतीजा हैकि भारतीय परिवारों के पास लगभग 25,000 टन सोना है और यह आंकड़ा बढ़ता जा रहा है. इसी के साथ भारतीय परिवारों के पास दुनिया का सबसे अधिक सोना है. सोने के प्रति भारतीयों के इसी लगाव का जिक्र करते हुए एक रिसर्च एनालिस्ट ने बीते मार्च के महीने में एक चौंकानेवाले डेटा का खुलासा किया. इसके मुताबिक, भारत में लोगों की संपत्ति में महज एक साल में सोने के जरिए ही लगभग 750 बिलियन डॉलर का उछाल आया. इससे पता चलता है कि देशभर में बीते एक साल में सोने की किनी खरीदारी हुई. एक पोस्ट के जरिए एनालिस्ट ए के माधवन ने बताया कि भारत का प्राइवेट गोल्ड रिजर्व 25,000 टन है, जो अमेरिका, जर्मनी, चीन और यहां तक कि भारतीय रिजर्व बैंक के पास रखे गोल्ड रिजर्व से भी ज्यादा है.

भारत सोने का दूसरा सबसे बड़ा खरीदार

बता दें कि अमेरिका, जर्मनी, इटली, फ्रांस, रूस, चीन, स्विट्जरलैंड, भारत, जापान और तुर्की के पास जैसे देशों के सेंट्रल बैंकों के पास रखा टोटल गोल्ड रिजर्व भी भारतीय परिवारों के पास मौजूद सोने के बराबर नहीं है. इससे पता चलता है कि भारत में लोग सेविंग्स या इंवेस्टमेंट के नजरिए से सोने को कितना अहम मानते हैं. गोल्ड हमेशा से भारत में लोगों का पसंदीदा रहा है क्योंकि महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और मुद्रा में उतार-चढ़ाव के बीच यह ढाल के रूप में काम करता है. शादियों के मौसम में या फेस्टिव सीजन में इसकी डिमांड और भी बढ़ जाती है. गांव में लोग सोने का इस्तेमाल कई बार बैंकों में गिरवी रखने और अपनी जरूरतों को पूरा करने में करते हैं. सोने की कीमतों में वैश्विक उतार-चढ़ाव के बावजूद भारत चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सोने का उपभोक्ता बना हुआ है.

भारत की डिफेंस कंपनी को इस्राईल से मिला करोड़ों का ऑर्डर

नई दिल्ली। भारत की पारस डिफेंस एंज स्पेस टेक्नोलॉजीज कंपनी (PARAS) को इज़राइल की एल्बिट सिक्योरिटी सिस्टम्स लिमिटेड से लगभग 34 करोड़ रुपए का एक ऑर्डर मिला है. कंपनी को इलेक्ट्रो-ऑप्टिक्स की सप्लाई के लिए यह ऑर्डर मिला है. जानकारी मिली है कि कंपनी इस ऑर्डर को फरवरी 2026 से नवंबर 2026 के बीच पूरा करनी की योजना बना रही है. एक ओर जहां ट्रंप के टैरिफ, H-1 वीजा और फॉर्मा कंपनियों पर लगाए गए टैरिफ के कारण भारतीय शेयर बाजार में हलचल है, वहीं शुक्रवार को इस अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर से कंपनी के शेयरों में एक प्रतिशत से अधिक की उछाल देखी गई. सोमवार, 29 सितंबर को भी इसके शेयर फोकस में रह सकते हैं. पारस डिफेंस एंड स्पेस टेक्नोलॉजीज कंपनी का मार्केट कैप 55.96 बिलियन का है।

सिद्धारमैया की डिमांड पूरी नहीं कर पाए अजीम प्रेमजी

बेंगलुरु। बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम की समस्या बढ़ती ही जा रही है. इसे कम करने को लेकर हाल ही में कर्नाटक सरकार ने विप्रो के चेयरमैन अजीम प्रेमजी से एक अनुरोध किया था, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया. दरअसल, शहर में ट्रैफिक जाम की समस्या को कम करने के लिए मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने 19 सितंबर को प्रेमजी को एक पत्र लिखा था. इसमें अनुरोध किया गया कि अगर विप्रो अपने सरजापुर कैंपस को आम वाहनों के लिए खोल दें, तो इससे आउटर रिंग रोड पर इब्लूर जंक्शन के भारी ट्रैफिक को 30 परसेंट तक कम किया जा सकता है. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, अजीम प्रेमजी ने उनके इस अनुरोध को ठुकरा दिया है.अजीम प्रेमजी ने माना कि बेशक बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम की समस्या काफी गंभीर है, लेकिन इसके पीछे कई चीजें जिम्मेदार हैं. इसके लिए कोई एक सॉल्यूशन काफी नहीं है।

साप्ताहिक शहर सत्ता

गरबा पर वक्फ बोर्ड अध्यक्ष का बयान
छत्तीसगढ़ में सियासी घमासान

कांग्रेस ने बताया भाजपा का टूलकिट, भाजपा बोली – गरबा आस्था का पर्व, सबका स्वागत है

रायपुर। नवरात्रि के अवसर पर गरबा को लेकर छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड अध्यक्ष डॉ. सलीम राज के बयान ने प्रदेश की राजनीति में नई हलचल मचा दी है। उन्होंने मुस्लिम समाज से अपील की थी कि मूर्ति पूजा से जुड़े आयोजनों में दूरी बनाए रखें। इस बयान के बाद कांग्रेस ने वक्फ बोर्ड को भाजपा का टूलकिट बताया, वहीं भाजपा ने इसे सियासी मुद्दा बनाने का आरोप लगाते हुए गरबा को आस्था और सौहार्द का पर्व बताया।

कांग्रेस मीडिया विभाग के प्रदेश अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने सख्त प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वक्फ बोर्ड भाजपा के टूलकिट की तरह काम कर रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा इस मुद्दे को उछालकर समाज में विभाजन और वोटों का ध्रुवीकरण करना चाहती है।

शुक्ला ने कहा, "गरबा हिंदू संस्कृति और आस्था का पर्व है। इसमें दूसरे धर्मों के लोग वैसे भी पूजा-पाठ के लिए शामिल नहीं होते। न कभी हिंदू नमाज पढ़ने मस्जिद जाते हैं और न किसी मुस्लिम को गरबा में देवी की पूजा करते देखा गया है। इसलिए यह विवाद केवल भाजपा का प्रोपेगेंडा है।"

इस पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा विधायक पुरंदर मिश्रा ने कहा कि गरबा देवी मां की आराधना का पर्व है और इसमें सभी धर्मों के लोगों का स्वागत है। उन्होंने कहा कि "गरबा आस्था और संस्कृति से जुड़ा आयोजन है। लोग परिवार सहित इसमें भाग लें और मिलजुलकर पर्व मनाएं। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई – सभी भाई-भाई हैं और भारतवासी होने के नाते हमें एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।" मिश्रा ने यह भी कहा कि सलीम राज वरिष्ठ नेता हैं और संभव है कि उनका बयान किसी विशेष संदर्भ में दिया गया हो। वह खुद उनसे बातचीत करेंगे और स्पष्टता लेंगे।

सलीम राज का बयान – दूरी की अपील, पर कोई रोक नहीं

दरअसल, वक्फ बोर्ड अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने हाल ही में बयान दिया था कि "मुस्लिम समाज मूर्ति पूजा में आस्था नहीं रखता, इसलिए उन्हें गरबा जैसे आयोजनों से दूरी बनाए रखनी चाहिए।" हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि कोई मुस्लिम व्यक्ति गरबा समिति की अनुमति से वेशभूषा और परंपरा का सम्मान करते हुए शामिल होना चाहे, तो उस पर कोई आपत्ति नहीं होगी।

गरबा पर सियासत गरमाई

सलीम राज के बयान के बाद जहां कांग्रेस इसे भाजपा का चुनावी एजेंडा बता रही है, वहीं भाजपा इसे आस्था और एकता से जोड़ रही है। अब यह मुद्दा प्रदेश की राजनीति में गरमा गया है और नवरात्रि के अवसर पर यह बहस आने वाले दिनों में और तीखी हो सकती है।

छत्तीसगढ़ में महिलाओं के साथ भेदभाव
कांग्रेस ने भाजपा पर लगाया आरोप

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में महतारी वंदन योजना से जुड़ी महिलाओं के नाम काटे जा रहे हैं, जबकि बिहार में महिलाओं को 10,000 रुपए दिए जा रहे हैं। उन्होंने इसे महिलाओं के साथ भेदभाव और वादा खिलाफी बताया।

धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि छत्तीसगढ़ में वंदन योजना से अभी भी लगभग 40% महिलाएं वंचित हैं और योजना से जुड़ी कई महिलाओं को मात्र 500 रुपए मिल रहे हैं। उन्होंने पूछा कि जब प्रधानमंत्री बिहार की महिलाओं को यह राशि दे रहे हैं तो छत्तीसगढ़ की महिलाओं को क्यों नहीं।

उन्होंने भाजपा की "दोगली नीति" का आरोप लगाते हुए कहा कि चुनाव के समय महिलाओं को पैसा देकर वोट हासिल किया जाता है, लेकिन सत्ता मिलने के बाद उनके साथ धोखा किया जाता है। कांग्रेस पार्टी की मांग है कि बिहार की महिलाओं की तरह छत्तीसगढ़ की महिलाओं को भी दीपावली से पहले 10,000 रुपए दिए जाएं और प्रदेश की हर महिला को महतारी वंदन योजना में शामिल किया जाए।

कोरबा कलेक्टर विवाद

ननकी देंगे 4 अक्टूबर को सीएम हाऊस पर धरना

कोरबा/रायपुर। पूर्व गृहमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता ननकीराम कंवर ने 4 अक्टूबर को मुख्यमंत्री निवास, रायपुर के सामने धरने का ऐलान किया है। उन्होंने इसकी जानकारी रायपुर कलेक्टर को भेजी है। कंवर का आरोप है कि कोरबा कलेक्टर की अनियमितताओं और मनमानी के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की जा रही।

कलेक्टर पर आरोप

कंवर ने कहा कि उन्होंने मुख्यमंत्री और कई केबिनेट मंत्रियों के समक्ष कोरबा कलेक्टर की शिकायतें दर्ज करवाई थीं, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने यह भी दावा किया कि कई अधिकारियों के नियंत्रण में मुख्यमंत्री कार्यालय काम कर रहा है, जिससे वास्तविक स्थिति तक मुख्यमंत्री की पहुँच नहीं होती और अनियमित अधिकारी सुरक्षित रहते हैं।

पिछले अनुभव और शिकायतें

पूर्व गृहमंत्री ने बताया कि कांग्रेस सरकार के दौरान उन्होंने कई घोटालों—पीएससी परीक्षा, शराब, सीजीएमएससी दवा खरीद, कोयला घोटाला, डीएमएफ घोटाला और एनएचएआई फर्जी मुआवजा—के खिलाफ शिकायतें केंद्र सरकार को दी थीं। इन मामलों में दर्जनभर से अधिक आईएएस अधिकारियों, डिप्टी कलेक्टर और बड़े नेताओं के खिलाफ कार्रवाई हुई।

ओडीएफ घोटाले का उदाहरण

ननकीराम कंवर ने कोरबा में आयोजित मंच पर केबिनेट मंत्री केदार कश्यप के सामने ओडीएफ घोटाले की जानकारी दी थी। उस समय तत्कालीन कलेक्टर पी. दयानंद ने आरोपों को खारिज कर दिया था। बाद में सैकड़ों शौचालयों की गड़बड़ी की शिकायतें एसडीएम कार्यालय में दर्ज हुईं, जो कंवर के आरोपों की पुष्टि करती हैं।

शिकायतों पर नहीं लिया गया संज्ञान

कंवर ने कहा कि उनकी शिकायतों को भाजपा सरकार में भी नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर वरिष्ठ नेताओं की शिकायतों पर भी ध्यान नहीं दिया गया, तो आम जनप्रतिनिधियों की समस्याओं का क्या होगा।

ननकीराम कंवर को धरना देना पड़ा मजबूरी आम आदमी की स्थिति भी चिंताजनक: कांग्रेस

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि पूर्व मंत्री ननकीराम कंवर का मुख्यमंत्री निवास के सामने धरना देने का ऐलान भाजपा सरकार की जन सरोकार से दूरी और प्रशासनिक अराजकता का सबूत है। बैज ने कहा कि वरिष्ठ नेता को अपनी मांग मनाने के लिए यह कदम उठाना पड़ा, तो आम आदमी की स्थिति की कल्पना की जा सकती है। बैज ने आरोप लगाया कि राज्य में प्रशासनिक अधिकारी भाजपा कार्यकर्ताओं और पत्रकारों को प्रताड़ित कर रहे हैं। ननकीराम कंवर ने अपने पत्र में डीएमएफ फंड के दुरुपयोग और कलेक्टर की मनमानी का उल्लेख किया था, लेकिन सरकार ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि पूरे प्रदेश में यही हालात हैं। पूर्व भाजयुमो अध्यक्ष रवि भगत ने भी बेलगाम नौकरशाही और मंत्री की मनमानी को उजागर किया था। कमजोर सरकार के कारण प्रशासनिक तंत्र बेलगाम हो गया है, और आम आदमी अपने रोजमर्रा के कामों के लिए सरकारी दफ्तरों में भटकने को मजबूर है।

जेम पोर्टल में भ्रष्टाचार, कांग्रेस ने जांच की मांग की

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने जेम पोर्टल के माध्यम से की गई सभी खरीदारी की जांच की मांग की है।

पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि जेम पोर्टल भ्रष्टाचार का केंद्र बन चुका है और इसमें राज्य के बाहर के सप्लायर्स से अत्यधिक खरीदारी की जा रही है, जबकि स्थानीय व्यापारियों की अनदेखी हो रही है। दीपक बैज ने बताया कि पोर्टल से अब तक 87,873 करोड़ रुपये की खरीदारी हुई है, जिसमें कई मामलों में वस्तुओं की कीमतें बाजार भाव से कई गुना अधिक थी। उदाहरण के तौर पर, 300 रुपये का जग 32,000 रुपये में, 1 लाख की टीवी 10 लाख में, 60 हजार की रोटी मेकर मशीन 8 लाख में और 1,539 रुपये का ट्रैक सूट 2,499 रुपये में खरीदा गया। उन्होंने कहा कि आठ लाख रुपये की रोटी खरीद मामले में भी लीपापोती की जा रही है। बैज ने चेतावनी दी कि यदि जेम पोर्टल से हुई सभी खरीदारी का सोशल ऑडिट कराया जाए, तो पूरा सिस्टम उजागर हो जाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि इस भ्रष्टाचार में सरकार के ऊपरी स्तर तक लोग शामिल हैं, इसलिए जांच नहीं करवाई जा रही है। उन्होंने मांग की कि सरकार सभी खरीदारी और उनके भाव सार्वजनिक करे।

जनवरी से जुलाई 2025 तक 60 से अधिक गौवंशी पशुओं ने गंवाई जान

गायों की मौत जारी, कांग्रेस ने भाजपा पर लगाया आरोप

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि पूरे छत्तीसगढ़ में गौवंशी पशुओं की लगातार हो रही मौत भाजपा सरकार की अकर्मण्यता का नतीजा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार केवल गौ सेवा के नाम पर राजनीति कर रही है, लेकिन असलियत में गायें सड़क हादसों में मारी जा रही हैं।

सुरेंद्र वर्मा ने कहा कि हाल ही में बिलासपुर-रतनपुर हाईवे, दुर्ग के बाफना और बारीडीह समेत कई स्थानों पर दर्जनों गायें ट्रकों और कंटेनरों की चपेट में आकर मारी गई हैं। उन्होंने बताया कि जनवरी से जुलाई 2025 तक 60 से अधिक गौवंशी पशु और 55 लोग सड़क हादसों में जान गंवा चुके हैं।

उन्होंने कहा कि बिना वैकल्पिक व्यवस्था के गौठानों को बंद करना, नगरीय निकायों और हाईवे अथॉरिटी के बीच समन्वयहीनता, पशुपालकों पर एफआईआर और गैर बीमित पशुओं की अनदेखी सभी मिलकर यह स्थिति पैदा कर रही हैं। सुरेंद्र वर्मा ने चेतावनी दी कि भाजपा सरकार को पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा स्थापित 10 हजार से अधिक गौठानों की व्यवस्था बहाल कर गौ सेवा सुनिश्चित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अन्यथा, गौ हत्या के पाप का जिम्मा भाजपा सरकार पर रहेगा।

जीएसटी रिफॉर्म्स से अर्थव्यवस्था को नई दिशा : सीएम साय

धन्यवाद मोदी जी" कार्यक्रम में बोले – आमजन को मिल रहा प्रत्यक्ष लाभ

रायपुर। राजधानी रायपुर के मेडिकल कॉलेज सभागार में रविवार को आयोजित जीएसटी 2.0 रिफॉर्म्स – "धन्यवाद मोदी जी" कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि जीएसटी सुधारों ने देश की आर्थिक व्यवस्था को नई दिशा दी है। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का "ऐतिहासिक और साहसिक निर्णय" बताते हुए कहा कि इस कदम से 140 करोड़ भारतीयों के जीवन में प्रत्यक्ष खुशहाली आई है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि जीएसटी दरों में कमी से दैनिक उपभोग की वस्तुएँ आमजन को सस्ती मिल रही हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि हाल ही में जब वे एक मार्ट में गृहणियों से मिले तो महिलाओं ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि रसोई का बजट पहले की तुलना में काफी कम हो गया है। इसी तरह किसानों को भी इन सुधारों से बड़ी राहत मिली है। ट्रैक्टर के दामों में 65 हजार से 1 लाख रुपये तक की कमी आई है, जिससे कृषि यंत्र अब किसानों की पहुँच में और अधिक सुलभ हुए हैं।

उन्होंने कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में व्यापारियों और निवेशकों की बड़ी भूमिका है। प्रदेश की नई औद्योगिक नीति को देश-विदेश के निवेशकों ने सराहा है। मुख्यमंत्री ने बताया कि उनकी हालिया जापान और कोरिया यात्रा के दौरान हुए इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रम में अनेक निवेशकों ने छत्तीसगढ़ में निवेश की गहरी रुचि व्यक्त की। आने वाले समय में इन निवेशों से प्रदेश में बड़े पैमाने पर रोजगार का सृजन होगा।

इस अवसर पर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए जीएसटी सुधार अभूतपूर्व हैं। उन्होंने कहा कि इनसे न केवल आम आदमी को राहत मिल रही है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत हो रही है।

पद्मश्री विभूतियों और राष्ट्रीय खिलाड़ियों का सम्मान

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री साय ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाली हस्तियों को सम्मानित किया। पद्मश्री प्राप्त विभूतियों और राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों को मंच पर सम्मानित कर उपस्थित जनसमूह ने तालियों से उनका स्वागत किया। सम्मानित व्यक्तित्वों में शामिल रहे- जॉन मार्टिन नेल्सन, डॉ. राधेश्याम बारले, श्रीमती उषा बारले, डॉ. पुखराज बाफना, श्रीमती फुलबासन बाई यादव, श्रीमती शमशाद बेगम, डॉ. भारती बंधु, अनुज शर्मा, मदन सिंह चौहान, सबा अंजुम, अजय कुमार मंडावी, हेमचन्द मांझी, पंडी राम, जागेश्वर यादव, राजेन्द्र प्रसाद, राजेश चौहान, नीता डुमरे।

मुख्यमंत्री ने भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अमर शहीद भगत सिंह की जयंती के अवसर पर राजधानी रायपुर स्थित भगत सिंह चौक पहुँचकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि अमर शहीद भगत सिंह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के वह तेजस्वी नायक थे, जिन्होंने अपने अदम्य साहस, अटूट देशभक्ति और सर्वोच्च बलिदान से आने वाली पीढ़ियों के लिए अमिट प्रेरणा छोड़ी है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है और स्वतंत्रता के लिए त्याग ही सच्ची देशभक्ति का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगत सिंह के विचार और आदर्श आज भी युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करते हैं।

करूर हादसे पर जताया शोक

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने तमिलनाडु के करूर में राजनीतिक रैली के दौरान हुई दुखद घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने दिवंगतों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदनाएँ प्रकट कीं और ईश्वर से उन्हें इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की।

'मन की बात' करोड़ों देशवासियों को जोड़ने का माध्यम : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रविवार को राजधानी रायपुर के शंकर नगर स्थित सिंधु पैलेस में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के रेडियो संवाद कार्यक्रम 'मन की बात' की 126वीं कड़ी का श्रवण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मन की बात' केवल संवाद नहीं, बल्कि करोड़ों देशवासियों को जोड़ने, प्रेरित करने और नवाचार व उत्कृष्ट कार्यों को सामने लाने का सशक्त माध्यम है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम के दौरान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह और स्वर कोकिला लता मंगेशकर की जयंती पर उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि इन विभूतियों का जीवन और कार्य सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। साथ ही उन्होंने प्रदेशवासियों को शक्ति उपासना के पर्व नवरात्रि की शुभकामनाएँ दीं। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेखित दो साहसी बेटियों – लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा की 'नाविका सागर परिक्रमा' का विशेष रूप से जिक्र किया। दोनों महिला अधिकारियों ने 238 दिनों में 47,500 किलोमीटर की समुद्री यात्रा कर दुनिया के सबसे सुदूर स्थल 'नीमो प्वाइंट' पर तिरंगा फहराया। श्री साय ने कहा कि यह उपलब्धि भारत की नारी शक्ति और साहस का प्रतीक है।

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट का रजत जयंती समारोह सम्पन्न

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती समारोह का आयोजन बिलासपुर में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री रमेन डेका थे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव, वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी, विधि मंत्री श्री गजेन्द्र यादव, पूर्व राज्यपाल श्री रमेश बैस सहित अनेक गणमान्यजन इस अवसर पर मौजूद रहे।

कार्यक्रम में रजत जयंती स्मारिका का विमोचन भी किया गया। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि 1 नवम्बर 2000 को राज्य की स्थापना के साथ ही छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय की नींव रखी गई। यह न्यायालय संविधान का व्याख्याकार, नागरिक अधिकारों का संरक्षक और न्याय का प्रहरी बनकर खड़ा है। उन्होंने लोक अदालतों के माध्यम से लंबित मामलों के त्वरित निपटारे की सराहना की और कहा कि न्याय केवल सामर्थ्यवान नहीं, बल्कि गांव-गरीब और आमजनों के लिए भी सर्वसुलभ होना चाहिए।

विद्या भारती का संस्कृति संवर्धन में योगदान : सीएम

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि विद्या भारती संस्था भारत की संस्कृति और परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में विशिष्ट योगदान दे रही है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे मेहनत, अनुशासन और संस्कारों के बल पर राष्ट्र गौरव निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। मुख्यमंत्री साय बिलासपुर के कोनी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में नव-निर्मित सरस्वती महाविद्यालय भवन का लोकार्पण करने पहुँचे। इस अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में प्रदेश के 33 जिलों से चयनित 24 मेधावी छात्र-छात्राओं सहित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों और महोत्सवों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नया महाविद्यालय भवन शिक्षा और ज्ञान के विस्तार का प्रतीक है। सरस्वती महाविद्यालय द्वारा गुरु घासीदास विश्वविद्यालय और इसरो, बेंगलुरु के साथ एमओयू किए गए हैं, जिससे विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, अनुसंधान और तकनीकी क्षेत्र में नए अवसर मिलेंगे। यहाँ पं. सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय का स्टडी सेंटर भी प्रारंभ होगा।

नगरीय निकायों में खुलेंगे आदर्श सुविधा केंद्र

रायपुर। छत्तीसगढ़ के नगरीय निकायों में नागरिक सेवाओं को और अधिक सुगम, पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए राज्य सरकार के प्रस्ताव पर केंद्र सरकार ने 50 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं। इस राशि से पहले चरण में सभी 14 नगर निगमों और 55 नगर पालिकाओं में आदर्श सुविधा केंद्र स्थापित किए जाएंगे। ये केंद्र नागरिकों को सभी नगरीय सेवाओं के लिए वन-स्टॉप हब के रूप में कार्य करेंगे। केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय ने यह राशि म्यूनिसिपल शेयर्ड सर्विसेस सेंटर के अंतर्गत स्वीकृत की है। इसके जरिए नागरिकों को जन्म, मृत्यु, विवाह प्रमाण पत्र, व्यापार एवं विज्ञापन लाइसेंस, संपत्ति कर, जल-सीवरेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, नगर निगम संपत्ति बुकिंग, शिकायत निवारण जैसी सेवाएँ एक ही मंच पर उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने इस स्वीकृति पर केंद्र सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा"आदर्श सुविधा केंद्र सुशासन की हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करेंगे।

पारदर्शी व जिम्मेदार प्रशासन की ओर बड़ा कदम

ट्रिपल-आईटी नवा रायपुर में डिजिटल उत्पादकता और एआई प्रशिक्षण

रायपुर। नवा रायपुर स्थित ट्रिपल-आईटी में राज्य सरकार की पहल पर डिजिटल उत्पादकता संवर्धन एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एकीकरण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मंत्रालय एवं विभिन्न विभागों में पदस्थ अधिकारियों-कर्मचारियों को नवीनतम डिजिटल तकनीकों और एआई टूल्स का व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर प्रशासनिक कार्यों को अधिक कुशल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाना है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव श्री अविनाश चंपावत के मुख्य आतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में सुशासन एवं अभिसरण विभाग तथा मुख्यमंत्री के सचिव श्री राहुल भगत उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ट्रिपल-आईटी के डायरेक्टर प्रो. डॉ. ओपी व्यास ने की। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर अपने संदेश में कहा— "प्रशासनिक कार्यों की गति और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए डिजिटल प्रोडक्टिविटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का समुचित उपयोग आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। शासन-प्रशासन को अधिक जवाबदेह और कुशल बनाने में एआई टूल्स और डिजिटल तकनीकें अभूतपूर्व सहायक सिद्ध होंगी। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिकारियों-कर्मचारियों की कार्यक्षमता में गुणात्मक सुधार लाएंगे और नागरिक-केंद्रित शासन को नई मजबूती प्रदान करेंगे।"

सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव श्री चंपावत ने कहा कि कौशल उन्नयन (Skill Upgradation) एक सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्तित्व और कार्यसंस्कृति दोनों को निखारती है। उन्होंने एआई आधारित प्रशिक्षण को कर्मचारियों की क्षमता वृद्धि में एक "मील का पत्थर" बताते हुए प्रतिभागियों से इस अवसर का पूरा लाभ उठाने का आग्रह किया।

सुशासन एवं अभिसरण विभाग तथा मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत ने कहा कि "नागरिक-केंद्रित शासन में तकनीक की भूमिका अत्यंत अहम है।" उन्होंने ई-ऑफिस प्रणाली का उदाहरण देते हुए कहा कि तकनीक का प्रभावी उपयोग शासन को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और संवेदनशील बनाता है। ट्रिपल-आईटी के डायरेक्टर प्रो. डॉ. ओपी व्यास ने कहा कि एआई का स्मार्ट उपयोग करने के लिए सतर्कता और जागरूकता आवश्यक है। उन्होंने जोर दिया कि संवेदनशील और निजी डेटा एआई को नहीं देना चाहिए, ताकि इसका दुरुपयोग सार्वजनिक डोमेन में न हो सके।

साप्ताहिक शहर सत्ता

मेरा नाम है... देव आनंद...

101वें जन्मदिन के मौके पर उनसे जुड़े दिलचस्प किस्से

देव आनंद हिंदी सिनेमा के एक ऐसे स्टार जिनकी लोकप्रियता केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेश में भी थी। लाहौर से ग्रेजुएशन करने के बाद 1943 में जेब में 30 रुपए लेकर देव आनंद बॉम्बे आए और फिर सुपरस्टार बन गए। 3 दिसंबर, 2011 को उनका निधन हो गया था। देव आनंद के 101वें जन्मदिन के मौके पर नजर डालते हैं उनसे जुड़े दिलचस्प किस्सों पर...

1943 में जब देव आनंद लाहौर से बॉम्बे आए थे तो शुरुआत में उन्हें क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी। इसके बाद ब्रिटिश सरकार के दफ्तर में उन्होंने सैनिकों की चिट्ठियां पढ़ने का काम किया, लेकिन इसमें मन नहीं रमा तो एक्टर बनने की ठानी। एक दिन उनकी मुलाकात फिल्म प्रोड्यूसर बाबूराव से हुई। देव आनंद की कदकाठी, चाल-ढाल और हावभाव से बाबूराव इंप्रेस हो गए और उन्हें 1946 में आई फिल्म 'हम एक हैं' में रोल दे दिया। इस बारे में देव आनंद ने अपनी किताब 'रोमांसिंग विद लाइफ' में लिखा था - 'फिल्म की शूटिंग के दौरान मुझसे कहा गया कि मेरे दांतों के बीच गैप है जिसके लिए फिलर देना पड़ेगा। मैंने इनकार नहीं किया और फिलर भर दिया गया, मगर मुझे ये अटपटा लग रहा था। मैंने फिल्म के मेकर्स से फिलर हटाने की गुजारिश की और उन्होंने फिलर हटा दिया। मैं इस बात से खुश था कि फिल्मों में मैं जैसा था जनता ने मुझे वैसे ही पसंद किया था।' 'हरे रामा हरे कृष्णा', 'जॉनी मेरा नाम' जैसी हिट फिल्मों के बाद देव आनंद इतने मशहूर हो गए थे कि लड़के उनके जैसे दांतों का शेप रखने के लिए अपने दांत तक तुड़वाने लगे थे।

किस्सा 1

किस्सा 2

जब देव आनंद की बात सुनकर हंस पड़े जवाहरलाल नेहरू

ये किस्सा 1947 का है जब प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने देव आनंद को खाने पर बुलाया था। इस दौरान देव आनंद के साथ राज कपूर और दिलीप कुमार भी मौजूद थे। तीनों रियल लाइफ में काफी गहरे दोस्त थे। देव आनंद ने इस मुलाकात का किस्सा अपनी किताब रोमांसिंग विद लाइफ में शेयर करते हुए लिखा है, जब हम उनसे (नेहरू) मिलने पहुंचे तो उन्होंने हम तीनों को गले लगाया। वो बीमार चल रहे थे, लेकिन फिर भी हमसे बेहद गर्मजोशी से मिले। राज कपूर ने उनसे पूछा, 'पंडितजी हमने सुना है आप जहां भी जाते थे महिलाएं आपके पीछे भागा करती थीं। नेहरू ने कहा, मैं इतना पॉपुलर नहीं जितने तुम लोग हो। फिर मैंने उनसे सवाल किया, आपकी स्माइल ने लेडी माउंटबेटन को इम्प्रेस कर दिया था। क्या ये बात सच है? नेहरू ने जोर से हंसते हुए कहा, अपने बारे में ये कहानियां सुन कर मुझे बेहद मजा आता है। फिर दिलीप कुमार बोल पड़े, मगर लेडी माउंटबेटन ने खुद कहा था कि आप उनकी कमजोरी थे। नेहरू फिर जोर से हंसे और बोले, लोग चाहते हैं कि मैं इन कहानियों पर यकीन कर लूं। 'गाइड' के लिए देव आनंद को बेस्ट एक्टर और वहीदा रहमान को बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला था। 'गाइड' के लिए देव आनंद को बेस्ट एक्टर और वहीदा रहमान को बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला था।

किस्सा 3

'गाइड' बनाने पर लोगों ने कहा- पागल

1965 में रिलीज हुई फिल्म 'गाइड' देव आनंद के करियर की सबसे बड़ी फिल्मों में एक थी। यह फिल्म उस जमाने के हिसाब से काफी बोल्ड थी जिसमें एक्स्ट्रामैरिटल अफेयर को दिखाया गया था। यही वजह है जब देव आनंद इस फिल्म को बना रहे थे तो फिल्म इंडस्ट्री के कुछ लोगों ने उन पर सवाल उठाए। ये बात देव आनंद ने खुद एक इंटरव्यू में बताई थी। उन्होंने कहा था, जब हमने गाइड बनाई जो कि एडल्ट्री पर थी। लोगों ने मुझे कहा ये पागल हो गया है। देव अपने आपको बर्बाद कर रहा है, इसका स्टारडम खत्म हो जाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, जब फिल्म बन गई और देव आनंद ने फिल्म इंडस्ट्री के लिए एक स्पेशल प्रीमियर शो रखा तो कई सेलेब्स फिल्म देखने तो आए, लेकिन उन्होंने शो के बाद एक शब्द भी नहीं कहा। जब फिल्म रिलीज हुई तो धीरे-धीरे इसे पॉजिटिव रिव्यू मिलने लगे और फिल्म देखने के लिए दर्शक सिनेमाघरों का रुख करने लगे। इसे आज भी क्लासिक फिल्म माना जाता है।

जब डाकू ने खटखटाया देव आनंद के कमरे का दरवाजा

किस्सा 4

बात 1957 की है जब देव आनंद फिल्म 'नौ दो ग्यारह' की शूटिंग कर रहे थे। शूटिंग मध्यप्रदेश के शिवपुरी में चल रही थी। उस दौर में उस इलाके में डाकुओं का बोलबाला था। शूटिंग का पैकअप होने के बाद देव आनंद सहित पूरी टीम एक गेस्ट हाउस में ठहरी थी। आधी रात को किसी ने देव आनंद के कमरे का दरवाजा खटखटाया। उन्होंने अंदर से पूछा-कौन है? आवाज आई- हम हैं अमर सिंह। देव आनंद ने डरते हुए दरवाजा खोला तो सामने बड़ी-बड़ी मूंछों वाला डाकू खड़ा था। देव आनंद कुछ बोल पाते, इससे पहले ही डाकू ने एक्टर की तस्वीर निकाली और कहा-आप इस पर अपने साइन कर दीजिए। ये सुनते ही देव आनंद की जान में जान आई। उन्होंने झट से अपनी तस्वीर पर ऑटोग्राफ दिया जिसे देखकर डाकू ने कहा-देव साहब आपको कभी भी किसी चीज की जरूरत पड़े तो हमें याद कीजिएगा।

जब इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति ने देखी शूटिंग

किस्सा 5

इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो भी देव आनंद के फैन थे। इससे जुड़ा एक किस्सा देव आनंद ने अपनी किताब रोमांसिंग विद लाइफ में शेयर किया था। उन्होंने कहा था, फिल्म 'काला पानी' की शूटिंग देखने इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो आए थे। उस दिन हम 'बेखुदी में तुमको पुकारे चले गए' गाने की शूटिंग कर रहे थे। हमें पहले ही बता दिया गया था कि वो सेट पर आएंगे। हमने दो घंटे उनका इंतजार किया, लेकिन वे नहीं आए तो हमने गाना शूट कर लिया। शूटिंग खत्म होते ही राष्ट्रपति आ गए। हमने उनके लिए दोबारा शूटिंग की। उन्होंने शूटिंग के दौरान खूब तालियां बजाई थीं।

जीनत अमान ने ऑफर की सिगरेट और देव आनंद ने कहा- हीरोइन बनोगी?

किस्सा 6

देव आनंद ने बड़े भाई चेतन आनंद के साथ मिलकर 1949 में अपना बैनर नवकेतन लॉन्च किया था। इसके बैनर तले बनी सबसे सफल फिल्मों में से एक 1971 में आई फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' थी जिसमें देव आनंद की बहन के किरदार में जीनत अमान नजर आई थीं। फिल्म में जीनत की कास्टिंग के पीछे भी एक दिलचस्प किस्सा है। दरअसल, उस दौर में कोई भी एक्ट्रेस देव आनंद की बहन का किरदार नहीं निभाना चाहती थी। देव आनंद भी ऐसा चेहरा ढूंढ-ढूंढकर थक गए थे। तभी एक पार्टी में उनकी नजर मिस एशिया का खिताब जीत चुकी जीनत अमान पर पड़ी। जीनत देव आनंद के सामने बैठी थीं। देव आनंद को जीनत में अपनी फिल्म की मेन लीड एक्ट्रेस की छवि दिख गई। देव आनंद ने देखा कि जीनत ने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट और लाइटर निकाला। फिर सिगरेट होठों से दबाई और उसे लाइटर से जलाया। जब जीनत की नजर उन्हें देख रहे देव आनंद पर पड़ी तो उन्होंने प्यारी सी स्माइल देकर देव आनंद को भी सिगरेट ऑफर की। देव आनंद इनकार नहीं कर सके। फिर देव आनंद ने उनसे पूछा कि क्या आप फिल्मों में काम करेंगी? जीनत ने देव आनंद के चेहरे पर सिगरेट का धुआं छोड़ा और उन्हें देखती रहीं। देव आनंद ने अगला सवाल करते हुए कहा कि क्या मैं तुम्हें स्क्रीन टेस्ट के लिए बुला सकता हूं। जीनत ने पूछा, कब? देव आनंद ने कहा कल आ जाओ। जो भी समय तुम्हें सही लगे। जीनत अगले दिन स्क्रीन टेस्ट के लिए पहुंच गईं और इस तरह उन्हें अपनी डेब्यू फिल्म मिली। फिल्म में जीनत अमान पर फिल्माया और आशा भोसले का गाया गाना 'दम मारो दम' बेहद पॉपुलर हुआ और जीनत बड़ी स्टार बन गईं।

नारी रुपेण दैवीय महाशक्ति की आराधना का स्वर जसगीत

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

नारी रूपेण दैवीय आस्था व जन-विश्वास के प्रतिमूर्ति को देवी एवं माता की संज्ञा प्राप्त है। ग्राम्यांचल की लोक आराध्य देवी माता दाई, बूढ़ीदाई, कंकालिन, शीतला, दुर्गादाई, बहीदाई, सतबहिनी, चंडी, महामाई के रूप में सर्वत्र विराजित हैं। ग्रामीण अपने हार्दिक भाव को श्रद्धा-पुष्प अर्पित कर इन देवियों के चरणों पर आशा व विश्वास का दीप जलाते हैं। धार्मिक अनुष्ठान नवरात्र पर्व विशेष पर गाये जाने वाला लोकगीत 'जसगीत' कहलाता है। नौ दिनों तक लोग निजी एवं सार्वजनिक स्थान के जोत जवाँरा एंव देवी स्थापत्य स्थल पर देवी को यज्ञ स्थल पर जगजननी को गीत के जरिए आमंत्रित किया जाता है। प्रथम दिवस गाए जाने वाला 'देवी आह्वान गीत' होता है। समस्त देवतागण एवं सारा ब्रह्माण्ड माता के साथ आमंत्रित होते हैं।

'नेवता नेवता के हो जग रचों महामाई,
नेवता नेवता के हो
बहम ल नेवतेंव बिस्लू ल नेवर्तव,
अउ बेवतेव कयलास पति ला
राजा इंदरदेव वहू ला भेवतेव,
नेवता नेवत के हो जम रची

शब्द संरचना

अन्य लोकगीतों की तरह जसगीत में भी प्रथम दो पंक्तियाँ मुखड़ा होती है, जो हो माँ, हे माता. माई, नाईया, दाई, मधानी के साथ लयबद्ध होती है। पद संख्या दो या तीन होती है। आजकल जसमीत प्रतियोगिताओं में देवी के किसी कथा प्रसंग को लेकर लंबे जस गीतों की रचना होने लगी है। प्रश्न व उत्तर के पंक्तियों के गायन के पश्चात मुखड़े को लयबद्ध गाया जाता है। इस तरह एक विशेष गायन शैली के 'पचरा' कहलाता है। पचरा सर्वप्रथम गायक प्रमुख द्वारा गाया जाता है फिर समूह गान होता है। देवी स्थापना दिवस के स्थित्ति तिथि, साज-सज्जा मेट-चढ़ावा कथा प्रसंग के मुताचिक पचरा गाया जाता है। पचरा लोगों को लोक वाद्य यंत्रों के सुमधुर ध्वनि के साथ वीर, क्रोध शांत, करूणा, अक्ति, स्सों की रस पान कराता है। दैविक प्रभाव से भाव चिहल होकर लोग झूमने गाने नाचने लगते हैं, इसे देवता आना या देवता झूपना कहा जाता है। नवरात्रि के चार दिवस यह गीत गाया जाता है।

पचरा की बानगी प्रस्तुत है-

तुम खेलन दुलस्वा स्नबन रणयन हो
का पूजा लेवय बाल बरमवेव
का पूजा लेव्य मोरइयों
का पूजा लेवय बन के रक्सा हो रनबन हो,
नरियर लेवय बाल बरमदेव कुकरा लेव्य मोरंयाँ
मंइस्सा लेवय बन के रक्सा हो रनका स्नान हों..

देवी के रूप-सौंदर्य का दर्शन

जसगीत का प्रथम व महत्व पूर्ण भाग है सिगार गीत। सिंगार यानी श्रंगार करना नारी सुलम प्रवृत्ति है। बारी सुंदरता का प्रतीक मानी जाती है। प्राकृतिक सौंदर्य प्राप्त होने पर भी नारी में अतिरिक्त बाहा सौंदर्य अर्जन करने का स्वभाव होता है। नवरात्र के प्रथम दिवस से ही आराधक बारी रूपेण देवी स्वरूपा जगदम्बे को श्रृंगार सामकी अर्पित करते हैं। पंचमी तिथि को गाए जाने वाले देवी के रूप-सौदर्य जसगीत कुछ इस तरह होता है। मईया पचरंग पचरंग करत हे सिंगार हो माँ पचरंग परवा पस्यो भवन है प्रकरंग कलस बनाई हो सॉ

पचरंग दरी बने पचरंसी पचरंग साज सजाई हो मईया पचरंग

देवी के प्रति सेवा भावना, शौर्य का वर्णन

दुर्गा, काली, भवानी की संज्ञा प्राप्त देवी पाप, अधर्म, अन्याय का नाश करती है। दुर्गा-महिषा सुर संग्राम के कथा प्रसंग में देवी के शौर्य, पराक्रम व वीरता का वर्णन जसगीत में सुनने को मिलता है। सिंह पर सवार सशस्त्र देवी दुर्गा का रणभूमि में कूच करने का वृतांत जसगीत के लोकधुन की प्रस्तुति होती है। यह कथा प्रसंग नारी को शक्ति दायिनी व पाप हारिणी के रूप में चित्रित तो करता है, साथ ही यह भी संदेश देता है कि पुरुष प्रधान समाज में नारी अपने यथोचित स्थान पाने के लिए शांति के मार्ग के अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर अपनी शक्ति का प्रयोग कर समस्त नारी जाति को जीवन जीने का अधिकार निधर्धारित करती है।

'महिसासुर मारन बर चले हो दुरगा दाई सिंह म होके सवार एक हाथ धरे तलवार दूसर हाथ म कटारी महिसासुर संग करय लड़ाई हो भारी चम चम के हो तलवार सिंह म हो के सवार...' माता सेवा गीत में जगजननी के प्रति आराधक के सेवाभाव का जिक्र होता है। भक्त देवी को भौतिक वस्तुएँ अर्पित कर माता सम्मान की भावना रख अपने सेवाभाव को और प्रबल करता है। साथ ही, दूसरों को भी अपनी सेवा भावना को व्यक्त करने इस तरह अनुरोध करता है। 'गुथौ हो मालिन माई बर फूल गजरा कउने फूल के अजरा गजरा कउने फूल के हार... कउने फूल के माथ-मकुटिया सोला ओ सिंगार गुथौं हो मालिन माई बर चम्पा फूल के अजरा गजरा चमेली फूल के हार सेवती फूल के माथ-माथ-मकुटिया सोला ओ सिंगार गुथौ हो मालिन माई बर.....

विदाई का भाव जसगीत

नौ दिनों तक माता-पुत्र एवं देवी-भक्त का संबंध कायम रहता है। नवमी के दिन प्रतिमा व ज्योत जवाँरा विसर्जन के समय भक्तगण भाव-विहल हो जाते हैं। विदाई बेला को गाए जाने वाले जसगीत के लोकधुन बड़ा मर्मस्पर्शी होता है। तोला कइसे भेजेंव दाई तोला कइसे भेजेंव ओ... होगे तोर जाये के बेरा रो रो के मर मैं जइहौं तोला कइसे भेजेंव ओ..।

कोरिया रियासत की कुलदेवी कुंदरगढ़ में विराजित

डॉ. संजय अलंग

उडीसा और छत्तीसगढ़ की रियासतों ने अलग प्रांत बनाने का प्रयास किया पर असफल रहे। यह राज्यों में मिला दी गई। कोरिया शासक रामानुज प्रताप सिंह देव द्वारा 15 दिसंबर 1947 को कोरिया रियासत के भारत में विलय के अभिलेख को हस्ताक्षरित किया, जिसके आधार पर कोरिया की ओर से दीवान राय बहादुर सोहन लाल श्रीवास्तव ने एक जनवरी 1948 को विलय पर हस्ताक्षर किए। कोरिया रियासत मध्य प्रांत और बरार राज्य में मिला दी गई। साथ ही एक करोड़ दो लाख रुपए का शासकीय खजाना मध्य प्रांत और बरार की सरकार को सौंपा गया।

रामानुज विलास पैलेस को छोड़ सभी भवन को सौंप दिए गए। अधिकांश कोल चौहानों के आने पर रियासत से चले गए। भुईहार कोल वंश के ही हैं। यह लोग निम्न जाति में गिने जाते थे और कहीं कहीं राजतिलक भी इनसे कराया जाता था। धनुहार,गोंड, आदि जनजातियां कोरिया की प्राचीनतम निवासी हैं। अन्य सभी जातियां बाद में बाहर से आई, जिसमें चेरवा पहली थी। यह लोग पलामू से आए और बैगा बने। पलामू को चेरोगढ़ भी कहा जाता है। रियासत काल की कुल देवी कुंदरगढ़ और महामाया मंदिर यह लोग ही पुजारी हुए। रजवार, तेली, अहीर, ग्वाल, उरांव, गरड़िया, कोरी, बरगाह, घसिया, कहार, केवट, बनिया, कलार, हरिजन के बाद मुस्लिम, जैन, सिक्ख और ईसाई धर्मावलंबी बाद में आए। बंजारा लोग ही आयात निर्यात करते थे। नमक लाने के कारण लवण भी कहे जाते थे। लवड़ोही और बंजारीडांड इनसे ही संबंधित संज्ञाएं हैं। कोयला खदान खुलने से उच्च अधिकारी, तकनीशियन, श्रमिक, ठेकेदार और व्यापारी बाहर से आए। बोलचाल की भाषा पर सरगुजिया, छत्तीसगढ़ी और बघेलखंडी का प्रभाव रहा। कोरिया रियासत में लगभग बीस जमींदारियां थीं और उनकी जनसंख्या खालसा अर्थात वह क्षेत्र जो जमींदारियों के अंश नहीं थे और सीधे रियासत द्वारा शासित होता था, से अधिक थी।

माता अंबा देवी के नाम पर अंबागढ़ चौकी

राजनांदगांव से मानपुर मोहला रोड पर अंबागढ़ चौकी स्थित है। पहले यहां तक पहुंचने के लिए आवागमन के साधनों का अभाव होता था तथा इस क्षेत्र में भोंसलो का राज्य था। इस स्थल को आमागढ़ भी कहा जाता है। पहले यह स्थान घनघोर जंगल और दुर्गम पहाड़ी वाले क्षेत्र के नाम से लोग जानते थे। यह अनगढ़ सा क्षेत्र था। एक पराक्रमी गोंड दल इसी गढ़ में रहा करता था, अपने शत्रों के बल पर वह इलाके का राजा बना हुआ था। नागपुर के भोंसले उसका राजत्व स्वीकार नहीं करते थे फिर भी उसे परास्त नहीं कर पाते थे।

घने जंगलों में रहस्यमई गुफाओं में हजारों मनुष्य बरसों तक छिपे रह सकते थे और राज शासन को खबर तक नहीं लग सकती थी। आज वह अवस्था नहीं रह गई। यहां राजाओं की अधिष्ठात्री देवी माता अम्बे देवी थी, वह अपने राज्य को सुरक्षित माता की कृपा के कारण मानते थे। पहले यहां बड़े बड़े कीमती वृक्षों की भरमार होती थी, जिसकी अवैध कटाई और उसके परिवहन को रोकने के लिए जांच चौकी इस इलाके में यहीं बनाई गई थी। इस कारण माता अम्बे के साथ चौकी को जोड़कर अंबागढ़ चौकी नाम दिया गया।

एक किंवदंती है कि यहां अनगिनत हैरत में डालने वाली गुफा काफी संख्या में होने के कारण यहां डाकू शरण लेते थे। पुलिस और सेना उनकी खोज नहीं कर पाती थी। इन डाकुओं की खोज में महीनों तक पुलिस अथवा सेना चौकी में पड़ी रहती थी। परंतु अंबागढ़ चौकी के रहस्य से वह चौकी अनभिज्ञ बनी रहती थी। अब यह स्थान एक जिले का रूप ले चुका है। शहर के मुख्य मार्ग के मोड़ पर आज पहाड़ी के एक किनारे अंबे माता का विशाल मंदिर बन चुका है। वर्ष भर पर्यटक और स्थानीय लोग माता का दर्शन करने आते हैं। दोनों नवरात्रि में मनौती हेतु हजारों की संख्या में भक्तों द्वारा ज्योति कलश प्रज्ज्वलित की जाती है।

भगत सिंह नहीं बनोगे...Gen Z ?

पड़ोसी देशों में जेन-जेड या 'क्रांतिकारी आतंकवादी' ?

शहर सत्ता/रायपुर। शहीद-ए-आज़म और उनके साथी स्वतंत्रता-युद्ध में जूझ रहे थे, तब भी उनकी क्रांतिकारिता को लेकर सर्वानुमति नहीं थी। एक ओर उनके द्वारा ऐलान किया जा रहा था कि उन्हें इस युद्ध के लिए ऐसे नौजवान चाहिए जो आशा की अनुपस्थिति में भी भय व झिझक के बिना युद्ध जारी रख सकें और आदर-सम्मान की आशा रखे बिना ऐसी मुत्यु का वरण करने को तैयार हों, जिसके लिए न कोई आंसू बहे और न स्मारक बने, तो दूसरी ओर 'अहिंसक' समर्थकों के साथ 'बम की पूजा' और 'बम के दर्शन' के विवाद में उलझना पड़ रहा था।

सुविधा संपन्न वर्तमान युवा पीढ़ी बांग्लादेश में जो कमाल दिखाई लेकिन सत्ता का हिस्सा बनते ही वो भी सत्ता में आते ही मदांध हो गए। नेपाल में उग्र युवाओं की भीड़ ने जान, माल और देश को आर्थिक क्षति पहुँचाने के बाद अब भी धमकी दे रहे हैं। बदलाव और निरंकुशता के खिलाफ कमोबेश बांग्लादेशी युवाओं की तरह उनका भी प्रयास कलुषित होने लगा है। भारत के लेह में प्लांटेड जेन-जेड की कोशिश भी ऐसे लोगों के द्वारा की जा रही थी जो 'क्रांतिकारी आतंकवादी' हैं।

भगत सिंह प्रायः कहा करते थे कि गोरे अंग्रेजों की जगह काले या भूरे साहबों के आ जाने भर से देश और देशवासियों की नियति नहीं बदलने वाली। उन्हें उम्मीद थी कि
(१) 'हवाओं में रहेगी मेरे खयालों की बिजली, ये मुश्तेखाक है फानी, रहे रहे न रहे.'
(२) 'दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उलफत' और उनकी 'मिट्टी से भी खुशबू-ए-वतन आएगी'
(३) 'लिख रहा हूं मैं अंजाम जिसका कल आगाज आएगा
मेरे लहू का हर एक कतरा इंकलाब लाएगा
मैं रहूं या न रहूं पर ये वादा है मेरा तुमसे कि
मेरे बाद वतन पर मरने वालों का सैलाब आएगा'
(४)'उसे यह फिक्र है हरदम नया तर्जे जफा क्या है
हमें यह शौक हैं देखें सितम की इंतहा क्या है'
'दहर से क्यों खफा रहें, चर्ख का क्यों गिला करें
सारा जहां अदू सही आओ मुकाबला करें'

118वीं जयंती पर नमन

भगत सिंह की जयंती विशेष 28 सितंबर हो या शहादत दिवस 23 मार्च हैरत व अफ़सोस जताने से परहेज़ संभव नहीं हो पाता कि देश का सत्तातंत्र भगत सिंह की शहादत का सिला उनके अरमानों से मुंह मोड़कर और उनके परिजनों से कृतघ्नता बरत कर देता आ रहा है। शहीद-ए-आज़म और उनके साथियों की शहादतों के सम्मान की प्रतीकात्मक रक्षा ही आज सम्भव है और उनको सच्ची श्रद्धांजलि अभीष्ट इंकलाब का रास्ता हमवार करके ही दी जा सकती है, जो अभी भी उधार है और जिसका जिम्मा लेने या सूद चुकाने को कोई सत्ता भोगी तैयार नहीं दिखायी देता। तुर्रा यह कि पड़ोसी देशों में जेन-जेड युवा क्रांति और बदलाव के नाम पर आतंक बन चुके हैं। ईश्वर का लाख धन्यवाद की हमारे शहीदे आज़म ने कभी देशवासियों के लिए जान-माल का नुकसान नहीं किये, उनके टारगेट में असल दुश्मन थे। इसलिए तो आज भी वे सभी शहीद पूजनीय हैं।

'पंजाब माता' 'देशमाता' क्यों नहीं ?

भगत की शहादत के बाद उनकी माता विद्यावती को 'पंजाब माता' की उपाधि दी गई तो पंजाबी के लोकप्रिय कवि संतराम 'उदासी' ने अपनी एक कविता में सवाल उठाया था कि क्या भगत सिंह ने सिर्फ पंजाब के लिए जान दी थी? देश के लिए दी थी तो उनकी माता को 'देशमाता' का खिताब क्यों नहीं? लेकिन किसी ने भी उनकी बात नहीं सुनी।

गीतकार शैलेंद्र ने यह तब लिखा था

वाक्या 1948 का है यानी 77 साल पुराना है। किसान आंदोलनों के जनक स्वामी सहजानंद सरस्वती उन दिनों के लोकप्रिय गीतकार शैलेंद्र के साथ शहीद-ए-आज़म के शहादत दिवस पर पंजाब के जालंधर में आयोजित एक सभा में भाग लेने जा रहे थे, तो पुलिस ने उन्हें रेलवे स्टेशन पर ही रोक लिया और कहा कि चूंकि शहर में निषेधाज्ञा लगा दी गई है, इसलिए उन्हें सभास्थल नहीं जाने दिया जा सकता। इस बात से आहत शैलेंद्र ने वहीं उस रेलवे स्टेशन पर ही एक कविता रची, जो बहुत लोकप्रिय हुई।

"भगत सिंह इस बार न लेना काया भारतवासी की,
देशभक्ति के लिए आज भी सजा मिलेगी फांसी की!
यदि जनता की बात करोगे तुम गद्दार कहाओगे,
बम्ब-सम्ब को छोड़ो भाषण दिया तो पकड़े जाओगे.

निकला है कानून नया चुटकी बजते बंध जाओगे
न्याय अदालत की मत पूछो सीधे मुक्ति पाओगे
कांग्रेस का हुक्म, जरूरत क्या वारंट तलाशी की!
देशभक्ति के लिए आज भी सजा मिलेगी फांसी की!"

भगता यानी भागों वाला बन गया बलवंत

थोड़ा-पीछे मुड़कर देखें तो 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के लायलपुर जिले के एक गांव में भगत सिंह का जन्म हुआ तो उनके पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह व स्वर्ण सिंह क्रांतिकारी गतिविधियों के सिलसिले में जेलों में थे. तीनों को उसी दिन रिहाई मिली तो माना गया कि नवजात शिशु अच्छा भाग्य लेकर आया है। उसका नाम भगत रखा गया, पंजाबी में जिसका अर्थ भी है- भाग्यशाली। माता विद्यावती उसको प्यार से भगता बुलाती थीं- भगता यानी भागों वाला. लेकिन बाद में अनीश्वरवादी भगत सिंह को न भाग्य में, न ही भगवान में भरोसा रह गया।

भगत सिंह के बचपन की तस्वीर

जेल में भगत सिंह की आखिरी तस्वीर

1925-26 में उन्होंने बलवंत सिंह नाम से अपने क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत की और जल्दी ही उसके कई आयाम विकसित कर लिए। क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन जुटाने के प्रयत्नों के क्रम में लखनऊ के पास काकोरी में ट्रेन पर ले जाए जा रहे सरकारी खजाने की लूट के ऐतिहासिक कांड में मृत्युदंड प्राप्त रामप्रसाद बिस्मिल को छुड़ाने की जद्दोजहद में असफलता हाथ आने के बावजूद वे निराश नहीं हुए और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (जो बाद में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में बदल गया) के 'पीले पर्चे' यानी संविधान में एक ऐसे समाज के निर्माण का संकल्प दोहराया, जिसमें एक मनुष्य द्वारा दूसरे का शोषण संभव न हो।

अपने दो साल के जेल जीवन का तो उन्होंने पढ़ने और लिखने में ऐसा सदुपयोग किया कि कई लोग उन्हें भारत का लेनिन कहने लगे। कहते हैं कि शहादत के लिए ले जाए जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। कम ही लोग जानते हैं कि उन्हें दिल्ली से मियांवाली सेंट्रल जेल स्थानांतरित किया गया तो उन्होंने वहां कैदियों से भेदभाव के खात्मे और उनके अधिकार उन्हें दिलाने के लिए लंबी भूख हड़ताल भी की थी।

इंटरनेट के साथ Gen Z का इंकलाब भी ठप

oxfordreference.com के अनुसार, Gen Z (Generation Z) उस पीढ़ी को कहा जाता है जो 1997 से 2012 के बीच पैदा हुई है. यह वह युवा वर्ग है जो तकनीक, इंटरनेट और सोशल मीडिया के साथ बड़ा हुआ है. इन्हें Digital Natives भी कहा जाता है क्योंकि इनका जीवन स्मार्टफोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया से जुड़ा माना गया है। Gen Z के लोग ट्रेंड्स को अपनाते हैं। ऐसा देखा गया है कि ये पीढ़ी सबसे ज्यादा इंटरनेट और सोशल मीडिया का इस्तेमाल करती है। GEN Z (जेन जेड) ऑनलाइन लर्निंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर एक्टिव रहती है। नई चीजों को अपनाने और बदलने का हुनर रखती है और सोशल अवेयरनेस के लिए भी जानी जाती है। तुलना करें तो शहीदे आज़म भगत सिंह का इंकलाब Gen Z के 'क्रांतिकारी आतंकवाद' से ज्यादा सशक्त था। कहा जा सकता है कि इंटरनेट के साथ Gen Z का इंकलाब भी ठप हो सकता है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री सुकांत राजपूत द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, निरंकारी फर्नीचर के पीछे, पंडरी रायपुर से मुद्रित एवं शहरसत्ता, एस-15 प्रियदर्शिनी नगर, सेक्टर 1, मातृ-पितृ छाया अपार्टमेंट, रायपुर (छ.ग.), मोबाईल नं. 98271-81979, फोन नं. 0771-3158142, संपादक - सुकांत राजपूत (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार के लिए जिम्मेदार), महाप्रबंधक - प्रदीप चंद्रवंशी (मो. 70006-81023)।